قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَمَآ اُبَرِّئُ

पारा - 13

eParah

الجزء 13

وَمَآ	اُبَرِّئُ	نَفْسِيْ ۚ	اِنَّ	النَّفْسَ	لَاَمَّارَةٌۢ	بِالسُّوْٓءِ	اِلَّا
और नहीं	मैं बरी करता/करती	अपने नफ़्स को	बेशक	नफ़्स	अलबत्ता बहुत हुक्म देने वाला है	बुराई का	मगर

مَا	رَحِمَ	رَبِّيْ ؕ	اِنَّ	رَبِّيْ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿53﴾	وَقَالَ	الْمَلِكُ
जिस पर	रहम करे	मेरा रब	बेशक	मेरा रब	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और कहा	बादशाह ने

ائْتُوْنِيْ	بِهٖٓ	اَسْتَخْلِصْهُ	لِنَفْسِيْ ۚ	فَلَمَّا	كَلَّمَهٗ	قَالَ
लाओ मेरे पास	उसे	मैं उसे ख़ास कर लूं	अपनी ज़ात के लिए	फिर जब	उसने बात चीत की उससे	कहा

اِنَّكَ	الْيَوْمَ	لَدَيْنَا	مَكِيْنٌ	اَمِيْنٌ ﴿54﴾	قَالَ	اجْعَلْنِيْ
बेशक तू	आज से	हमारे यहां	मर्तबे वाला	अमानतदार है	उसने कहा	मुक़र्रर कर दीजिए मुझे

عَلٰى خَزَآئِنِ	الْاَرْضِ ۚ	اِنِّيْ	حَفِيْظٌ	عَلِيْمٌ ﴿55﴾	وَكَذٰلِكَ
ख़ज़ानों पर	ज़मीन के	बेशक मैं हूं	बहुत हिफ़ाज़त करने वाला	ख़ूब इल्म रखने वाला	और इसी तरह

مَكَّنَّا	لِيُوْسُفَ	فِي الْاَرْضِ ۚ	يَتَبَوَّاُ	مِنْهَا	حَيْثُ	يَشَآءُ ؕ	نُصِيْبُ
इक़्तिदार दिया हमने	यूसुफ़ को	ज़मीन में	वो रहता	उसमें	जहां	वो चाहता	हम पहुंचाते हैं

بِرَحْمَتِنَا	مَنْ	نَّشَآءُ	وَلَا	نُضِيْعُ	اَجْرَ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿56﴾	وَلَاَجْرُ
अपनी रहमत को	जिसे	हम चाहते हैं	और नहीं	हम ज़ाया करते	अजर	एहसान करने वालों का	और यक़ीनन अजर

ع 7 8 1

الْاٰخِرَةِ	خَيْرٌ	لِّلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَكَانُوْا	يَتَّقُوْنَ ﴿57﴾ ع	وَجَآءَ	اِخْوَةُ
आख़िरत का	बेहतर है	उनके लिए जो	ईमान लाए	और हैं वो	वो तक़वा करते/डरते	और आए	भाई

يُوْسُفَ	فَدَخَلُوْا	عَلَيْهِ	فَعَرَفَهُمْ	وَهُمْ	لَهٗ	مُنْكِرُوْنَ ﴿58﴾
यूसुफ़ के	फिर वो दाख़िल हुए	उस पर	पस उसने पहचान लिया उन्हें	जबकि वो	उससे	नावाक़िफ़ थे

وَلَمَّا	جَهَّزَهُمْ	بِجَهَازِهِمْ	قَالَ	ائْتُوْنِيْ	بِاَخٍ	لَّكُمْ
और जब	उसने तैयार करके दिया उन्हें	सामान उनका	कहा	लाना मेरे पास	भाई को	अपने

مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ	اَلَا	تَرَوْنَ	اَنِّيْٓ	اُوْفِي	الْكَيْلَ	وَاَنَا	خَيْرُ
अपने बाप की तरफ़ से	क्या नहीं	तुम देखते	बेशक मैं	मैं पूरा-पूरा देता हूं	पैमाना (ग़ल्ला)	और मैं	बेहतर हूं

الْمُنْزِلِيْنَ ﴿59﴾	فَاِنْ	لَّمْ	تَاْتُوْنِيْ	بِهٖ	فَلَا	كَيْلَ	لَكُمْ
सब मेज़बानी करने वालों से	फिर अगर	ना	तुम लाए मेरे पास	उसे	तो नहीं	कोई पैमाना (ग़ल्ला)	तुम्हारे लिए

عِنْدِيْ	وَلَا	تَقْرَبُوْنِ ﴿60﴾	قَالُوْا	سَنُرَاوِدُ	عَنْهُ	اَبَاهُ	وَاِنَّا
मेरे पास	और ना	तुम क़रीब आना मेरे	उन्होंने कहा	ज़रूर हम आमादा करेंगे	उसके बारे में	उसके वालिद को	और बेशक हम

لَفٰعِلُوْنَ ﴿61﴾	وَقَالَ	لِفِتْيٰنِهِ	اجْعَلُوْا	بِضَاعَتَهُمْ	فِيْ رِحَالِهِمْ
ज़रूर करने वाले हैं	और उसने कहा	अपने ग़ुलामों को	रख दो	पूंजी/सरमाया इनका	इनके सामाने सफ़र में

لَعَلَّهُمْ	يَعْرِفُوْنَهَآ	اِذَا	انْقَلَبُوْٓا	اِلٰٓى اَهْلِهِمْ	لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿62﴾
शायद कि वो	वो उसे पहचान जाऐं	जब	वो पलटें	तरफ़ अपने घर वालों के	शायद कि वो	वो लौट आऐं

فَلَمَّا	رَجَعُوْٓا	اِلٰٓى اَبِيْهِمْ	قَالُوْا	يٰٓاَبَانَا	مُنِعَ	مِنَّا	الْكَيْلُ
तो जब	वो लौटे	तरफ़ अपने वालिद के	उन्होंने कहा	ऐ हमारे अब्बा जान	रोक दिया गया	हमसे	पैमाना (ग़ल्ला)

فَاَرْسِلْ	مَعَنَآ	اَخَانَا	نَكْتَلْ	وَاِنَّا	لَهٗ	لَحٰفِظُوْنَ ﴿63﴾	قَالَ
तो भेज दें	साथ हमारे	हमारे भाई को	हम नाप भर ग़ल्ला लाऐं	और बेशक हम	उसकी	अलबत्ता हिफ़ाज़त करने वाले हैं	कहा

هَلْ	اٰمَنُكُمْ	عَلَيْهِ	اِلَّا	كَمَآ	اَمِنْتُكُمْ	عَلٰٓى اَخِيْهِ
नहीं	मैं एतबार कर सकता तुम पर	इसके मामले में	मगर	जैसा कि	एतबार किया था मैंने तुम पर	उसके भाई के मामले में

مِنْ قَبْلُ ؕ	فَاللّٰهُ	خَيْرٌ	حٰفِظًا ۪	وَّهُوَ	اَرْحَمُ	الرّٰحِمِيْنَ ﴿64﴾
इससे क़ब्ल	पस अल्लाह	बेहतरीन	हिफ़ाज़त करने वाला है	और वो ही	सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है	रहम करने वालों से

وَلَمَّا	فَتَحُوْا	مَتَاعَهُمْ	وَجَدُوْا	بِضَاعَتَهُمْ	رُدَّتْ	اِلَيْهِمْ ؕ
और जब	उन्होंने खोला	सामान अपना	उन्होंने पाया	अपनी पूंजी को	जो लौटा दी गई थी	तरफ़ उनके

قَالُوْا	يٰٓاَبَانَا	مَا	نَبْغِيْ ؕ	هٰذِهٖ	بِضَاعَتُنَا	رُدَّتْ	اِلَيْنَا ۚ
उन्होंने कहा	ऐ हमारे अब्बा जान	(और) क्या	हम चाहते हैं	ये है	पूंजी हमारी	जो लौटा दी गई है	तरफ़ हमारे

وَنَمِيْرُ	اَهْلَنَا	وَنَحْفَظُ	اَخَانَا	وَنَزْدَادُ	كَيْلَ	بَعِيْرٍ ؕ
और हम ग़ल्ला लाऐंगे	अपने घर वालों के लिए	और हम हिफ़ाज़त करेंगे	अपने भाई की	और हम ज़्यादा लेंगे	पैमाना (ग़ल्ला)	एक ऊंट का

ذٰلِكَ	كَيْلٌ	يَّسِيْرٌ ﴿65﴾	قَالَ	لَنْ	اُرْسِلَهٗ	مَعَكُمْ	حَتّٰى
ये	पैमाना (ग़ल्ला) है	बहुत आसान	कहा	हरगिज़ नहीं	मैं भेजूंगा उसे	साथ तुम्हारे	यहां तक कि

تُؤْتُوْنِ	مَوْثِقًا	مِّنَ اللّٰهِ	لَتَاْتُنَّنِيْ	بِهٖٓ	اِلَّآ	اَنْ	يُّحَاطَ
तुम दो मुझे	पुख़्ता वादा	अल्लाह (के नाम) से	अलबत्ता तुम ज़रूर लाओगे मेरे पास	उसे	मगर	ये कि	घेर लिया जाए

بِكُمْ ۚ	فَلَمَّآ	اٰتَوْهُ	مَوْثِقَهُمْ	قَالَ	اللّٰهُ	عَلٰى	مَا	نَقُوْلُ
तुम्हें	फिर जब	उन्होंने दिया उसे	पुख़्ता वादा अपना	उसने कहा	अल्लाह	उस पर	जो	हम कहते हैं

وَكِيْلٌ ﴿66﴾	وَقَالَ	يٰبَنِيَّ	لَا تَدْخُلُوْا	مِنْۢ بَابٍ	وَّاحِدٍ	وَّادْخُلُوْا
निगहबान है	और उसने कहा	ऐ मेरे बेटो	ना तुम दाख़िल होना	दरवाज़े से	एक ही	और तुम दाख़िल होना

مِنْ اَبْوَابٍ	مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ	وَمَآ	اُغْنِيْ	عَنْكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ شَيْءٍ ؕ
दरवाजों से	मुख़्तलिफ़	और नहीं	मैं बचा सकता	तुम्हें	अल्लाह से	कुछ भी

اِنِ	الْحُكْمُ	اِلَّا	لِلّٰهِ ؕ	عَلَيْهِ	تَوَكَّلْتُ ۚ	وَعَلَيْهِ	فَلْيَتَوَكَّلِ
नहीं	फ़ैसला	मगर	अल्लाह ही के लिए	उसी पर	तवक्कल किया मैंने	और उसी पर	पस चाहिए कि तवक्कल करें

الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿67﴾	وَلَمَّا	دَخَلُوْا	مِنْ حَيْثُ	اَمَرَهُمْ	اَبُوْهُمْ ؕ	مَا
तवक्कल करने वाले	और जब	वो दाख़िल हुए	जहाँ से	हुक्म दिया था उन्हें	उनके वालिद ने	ना

كَانَ	يُغْنِيْ	عَنْهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ شَيْءٍ	اِلَّا	حَاجَةً
था कि	काम आता	उन्हें	अल्लाह से	कुछ भी	मगर	एक हाजत थी

فِيْ نَفْسِ
दिल में

يَعْقُوْبَ	قَضٰهَا ؕ	وَاِنَّهٗ	لَذُوْ عِلْمٍ	لِّمَا	عَلَّمْنٰهُ	وَلٰكِنَّ
याक़ूब के	उसने पूरा किया जिसे	और बेशक वो	अलबत्ता इल्म वाला था	बवजह उसके जो	सिखाया था हमने उसे	और लेकिन

اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿68﴾ ع	وَلَمَّا	دَخَلُوْا	عَلٰى يُوْسُفَ	اٰوٰٓى
अक्सर	लोग	नहीं वो इल्म रखते	और जब	वो दाख़िल हुए	यूसुफ़ पर	उसने जगह दी

ع 8 11 2

اِلَيْهِ	اَخَاهُ	قَالَ	اِنِّيْٓ	اَنَا	اَخُوْكَ	فَلَا	تَبْتَئِسْ	بِمَا
अपने पास	अपने भाई को	उसने कहा	बेशक मैं	मैं ही	तेरा भाई हूं	पस ना	तू रंज कर	बवजह उसके जो

كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿69﴾	فَلَمَّا	جَهَّزَهُمْ	بِجَهَازِهِمْ	جَعَلَ	السِّقَايَةَ
थे वो	वो अमल करते	फिर जब	उसने तैयार कर के दिया उन्हें	सामान उनका	उसने रख दिया	प्याला

فِيْ رَحْلِ	اَخِيْهِ	ثُمَّ	اَذَّنَ	مُؤَذِّنٌ	اَيَّتُهَا الْعِيْرُ	اِنَّكُمْ
सामान में	अपने भाई के	फिर	पुकारा	एक पुकारने वाले ने	ऐ क़ाफ़िले वालो	बेशक तुम

لَسٰرِقُوْنَ ﴿70﴾	قَالُوْا	وَاَقْبَلُوْا	عَلَيْهِمْ	مَّاذَا	تَفْقِدُوْنَ ﴿71﴾	قَالُوْا
अलबत्ता चोर हो	उन्होंने कहा	जबकि वो मुतावज्जेह हुए	उनकी तरफ़	क्या चीज़	तुम गुम पाते हो	उन्होंने कहा

نَفْقِدُ	صُوَاعَ	الْمَلِكِ	وَلِمَنْ	جَآءَ	بِهٖ	حِمْلُ	بَعِيْرٍ
हम गुम पाते हैं	पैमाना	बादशाह का	और उसके लिए जो	लाए	उसे	बोझ है	एक ऊंट का

وَّاَنَا	بِهٖ	زَعِيْمٌ ﴿72﴾	قَالُوْا	تَاللّٰهِ	لَقَدْ	عَلِمْتُمْ	مَّا
और मैं	उसका	ज़ामिन हूं	उन्होंने कहा	क़सम अल्लाह की	अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया तुमने	नहीं

جِئْنَا	لِنُفْسِدَ	فِي الْاَرْضِ	وَمَا	كُنَّا	سٰرِقِيْنَ ﴿73﴾	قَالُوْا
आए थे हम	कि हम फ़साद करें	ज़मीन में	और नहीं	हैं हम	चोरी करने वाले	उन्होंने कहा

فَمَا	جَزَآؤُهٗ	اِنْ	كُنْتُمْ	كٰذِبِيْنَ ﴿74﴾	قَالُوْا	جَزَآؤُهٗ	مَنْ
तो क्या	बदला है उसका	अगर	हो तुम	झूठे	उन्होंने कहा	बदला उसका	वो है जो

وُّجِدَ	فِيْ رَحْلِهٖ	فَهُوَ	جَزَآؤُهٗ ؕ	كَذٰلِكَ	نَجْزِي	الظّٰلِمِيْنَ ﴿75﴾
वो पाया गया	उसके सामान में	तो वो ही	बदला है उसका	इसी तरह	हम बदला देते हैं	ज़ालिमों को

فَبَدَاَ	بِاَوْعِيَتِهِمْ	قَبْلَ	وِعَآءِ	اَخِيْهِ	ثُمَّ	اسْتَخْرَجَهَا
पस उसने शुरू किया	उनके थैलों/ख़ुरजियों से	पहले	थैले/ख़ुरजी से	अपने भाई के	फिर	उसने निकाल लिया उसे

مِنْ وِّعَآءِ	اَخِيْهِ ؕ	كَذٰلِكَ	كِدْنَا	لِيُوْسُفَ ؕ	مَا	كَانَ	لِيَاْخُذَ
थैले/ख़ुरजी से	अपने भाई की	इस तरह	तदबीर की हमने	यूसुफ़ के लिए	ना	था वो	कि वो पकड़ सके

اَخَاهُ	فِيْ دِيْنِ	الْمَلِكِ	اِلَّآ	اَنْ	يَّشَآءَ	اللّٰهُ ؕ	نَرْفَعُ
अपने भाई को	दीन/क़ानून में	बादशाह के	मगर	ये कि	जो चाहे	अल्लाह	हम बुलंद करते हैं

دَرَجٰتٍ	مَّنْ	نَّشَآءُ ؕ	وَفَوْقَ	كُلِّ	ذِيْ عِلْمٍ	عَلِيْمٌ ﴿76﴾	قَالُوْٓا
दरजात	जिसके	हम चाहते हैं	और ऊपर	हर	इल्म वाले के	एक ख़ूब इल्म वाला है	उन्होंने कहा

اِنْ	يَّسْرِقْ	فَقَدْ	سَرَقَ	اَخٌ	لَّهٗ	مِنْ قَبْلُ ۚ	فَاَسَرَّهَا
अगर	इसने चोरी की है	तो तहक़ीक़	चोरी की थी	भाई ने	इसके	इससे क़ब्ल	तो छुपा लिया इस बात को

يُوْسُفُ	فِيْ نَفْسِهٖ	وَلَمْ	يُبْدِهَا	لَهُمْ ۚ	قَالَ	اَنْتُمْ	شَرٌّ
यूसुफ़ ने	अपने दिल में	और नहीं	उसने ज़ाहिर किया उसे	उनके लिए	कहा	तुम	बुरे हो

مَّكَانًا ۚ	وَاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِمَا	تَصِفُوْنَ ﴿77﴾	قَالُوْا	يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ	
मक़ाम में	और अल्लाह	ख़ूब जानता है	उसे जो	तुम बयान कर रहे हो	उन्होंने कहा	ऐ अज़ीज़	

اِنَّ	لَهٗٓ	اَبًا	شَيْخًا	كَبِيْرًا	فَخُذْ	اَحَدَنَا	مَكَانَهٗ ۚ
बेशक	इसका	बाप	बूढ़ा	बड़ी उम्र का है	पस तू रख ले	हम में से किसी एक को	इसकी जगह

اِنَّا	نَرٰىكَ	مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿78﴾	قَالَ	مَعَاذَ	اللّٰهِ	اَنْ
बेशक हम	हम देखते हैं तुझे	मोहसिनीन में से	उसने कहा	पनाह	अल्लाह की	कि

نَّاْخُذَ	اِلَّا	مَنْ	وَّجَدْنَا	مَتَاعَنَا	عِنْدَهٗٓ ۙ	اِنَّآ	اِذًا
हम पकड़ें	मगर	उसको	पाया हमने	सामान अपना	पास जिसके	बेशक हम	तब

ع 9 11 3

لَّظٰلِمُوْنَ ﴿79﴾	فَلَمَّا	اسْتَيْـَٔسُوْا	مِنْهُ	خَلَصُوْا	نَجِيًّا ؕ	قَالَ
अलबत्ता ज़ालिम होंगे	फिर जब	वो मायूस हो गए	उस से	वो अलग हुए	सरगोशी के लिए	कहा

كَبِيْرُهُمْ	اَلَمْ	تَعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اَبَاكُمْ	قَدْ	اَخَذَ	عَلَيْكُمْ
उनके बड़े ने	क्या नहीं	तुम जानते	कि बेशक	तुम्हारे वालिद ने	तहक़ीक़	लिया था	तुम से

مَّوْثِقًا	مِّنَ اللّٰهِ	وَمِنْ قَبْلُ	مَا	فَرَّطْتُّمْ	فِيْ يُوْسُفَ ۚ	فَلَنْ
पुख़्ता वादा	अल्लाह (के नाम) से	और इससे पहले	जो	कोताही कर चुके तुम	यूसुफ़ के मामले में	तो हरगिज़ ना

اَبْرَحَ	الْاَرْضَ	حَتّٰى	يَاْذَنَ	لِيْٓ	اَبِيْٓ	اَوْ	يَحْكُمَ
मैं टलूंगा	(इस) ज़मीन से	यहां तक कि	इजाज़त दे	मुझे	मेरा वालिद	या	फ़ैसला कर दे

اللّٰهُ	لِيْ ۚ	وَهُوَ	خَيْرُ	الْحٰكِمِيْنَ ﴿80﴾	اِرْجِعُوْٓا	اِلٰٓى اَبِيْكُمْ
अल्लाह	मेरे लिए	और वो	बेहतर है	सब फ़ैसला करने वालों से	लौट जाओ	तरफ़ अपने वालिद के

فَقُوْلُوْا	يٰٓاَبَانَآ	اِنَّ	ابْنَكَ	سَرَقَ ۚ	وَمَا	شَهِدْنَآ	اِلَّا
फिर कहो	ऐ हमारे अब्बा जान	बेशक	आपके बेटे ने	चोरी की थी	और नहीं	गवाही दी हमने	मगर

بِمَا	عَلِمْنَا	وَمَا	كُنَّا	لِلْغَيْبِ	حٰفِظِيْنَ ﴿81﴾	وَسْـَٔلِ	الْقَرْيَةَ
वो जिसका	इल्म था हमें	और नहीं	थे हम	ग़ैब की	हिफ़ाज़त करने वाले	और पूछ लें	बस्ती वालों से

الَّتِيْ	كُنَّا	فِيْهَا	وَالْعِيْرَ	الَّتِيْٓ	اَقْبَلْنَا	فِيْهَا ؕ	وَاِنَّا
वो जो	थे हम	जिस में	और क़ाफ़िले वालों से	वो जो	आए हैं हम	जिस में	और बेशक हम

لَصٰدِقُوْنَ ﴿82﴾	قَالَ	بَلْ	سَوَّلَتْ	لَكُمْ	اَنْفُسُكُمْ	اَمْرًا ؕ
अलबत्ता सच्चे हैं	कहा	बल्कि	अच्छा कर दिखाया	तुम्हारे लिए	तुम्हारे नफ़्सों ने	एक काम को

فَصَبْرٌ	جَمِيْلٌ ؕ	عَسَى	اللّٰهُ	اَنْ	يَّاْتِيَنِيْ	بِهِمْ	جَمِيْعًا ؕ
तो सब्र ही	अच्छा है	उम्मीद है	अल्लाह	कि	वो ले आएगा मेरे पास	उन को	सबके सबको

اِنَّهٗ	هُوَ	الْعَلِيْمُ	الْحَكِيْمُ ﴿83﴾	وَتَوَلّٰى	عَنْهُمْ	وَقَالَ	يٰۤاَسَفٰى
क्योंकि वो	वो ही है	बहुत इल्म वाला	ख़ूब हिक्मत वाला	और उसने मुंह फेर लिया	उनसे	और बोला	हाय अफ़सोस

عَلٰى يُوْسُفَ	وَابْيَضَّتْ	عَيْنٰهُ	مِنَ الْحُزْنِ	فَهُوَ	كَظِيْمٌ ﴿84﴾
यूसुफ़ पर	और सफ़ेद हो गईं	दोनों आंखें उसकी	ग़म की वजह से	पस वो	ग़म से भरा हुआ था

قَالُوْا	تَاللّٰهِ	تَفْتَؤُا	تَذْكُرُ	يُوْسُفَ	حَتّٰى	تَكُوْنَ	حَرَضًا
उन्होंने कहा	क़सम अल्लाह की	आप हमेशा रहते हैं	आप याद करते	यूसुफ़ को	यहां तक कि	आप हो जाऐं	बीमार

اَوْ	تَكُوْنَ	مِنَ الْهٰلِكِيْنَ ﴿85﴾	قَالَ	اِنَّمَاۤ	اَشْكُوْا	بَثِّيْ
या	आप हो जाऐं	हलाक होने वालों में से	उसने कहा	बेशक	मैं शिकायत करता हूं	अपनी बेक़रारी की

وَحُزْنِيْۤ	اِلَى اللّٰهِ	وَاَعْلَمُ	مِنَ اللّٰهِ	مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿86﴾	يٰبَنِيَّ
और अपने ग़म की	तरफ़ अल्लाह के	और मैं जानता हूं	अल्लाह की तरफ़ से	जो	नहीं तुम जानते	ऐ मेरे बेटो

اذْهَبُوْا	فَتَحَسَّسُوْا	مِنْ يُّوْسُفَ	وَاَخِيْهِ	وَلَا	تَايْـَٔسُوْا	مِنْ رَّوْحِ
जाओ	पस सुराग़ लगाओ	यूसुफ़ का	और उसके भाई का	और ना	तुम मायूस हो	रहमत से

اللّٰهِ ؕ	اِنَّهٗ	لَا يَايْـَٔسُ	مِنْ رَّوْحِ	اللّٰهِ	اِلَّا	الْقَوْمُ	الْكٰفِرُوْنَ ﴿87﴾
अल्लाह की	क्योंकि वो	नहीं मायूस होते	रहमत से	अल्लाह की	मगर	वो लोग	जो काफ़िर हैं

فَلَمَّا	دَخَلُوْا	عَلَيْهِ	قَالُوْا	يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ	مَسَّنَا	وَاَهْلَنَا
फिर जब	वो दाख़िल हुए	उस पर	वो कहने लगे	ऐ अज़ीज़	पहुंची हमें	और हमारे घर वालों को

الضُّرُّ	وَجِئْنَا	بِبِضَاعَةٍ	مُّزْجٰىةٍ	فَاَوْفِ	لَنَا	الْكَيْلَ
तकलीफ़	और लाए हैं हम	पूंजी/सरमाया	हक़ीर	पस पूरा-पूरा दे दीजिए	हमें	पैमाना/ग़ल्ला

وَتَصَدَّقْ	عَلَيْنَا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يَجْزِى	الْمُتَصَدِّقِيْنَ ﴿88﴾	قَالَ	هَلْ
और सदक़ा कीजिए	हम पर	बेशक	अल्लाह	वो बदला देता है	सदक़ा करने वालों को	उसने कहा	क्या

عَلِمْتُمْ	مَّا	فَعَلْتُمْ	بِيُوْسُفَ	وَاَخِيْهِ	اِذْ	اَنْتُمْ	جٰهِلُوْنَ ﴿89﴾
जानते हो तुम	जो	किया था तुमने	साथ यूसुफ़ के	और उसके भाई के	जब	तुम	नादान थे

قَالُوْٓا	ءَاِنَّكَ	لَاَنْتَ	يُوْسُفُ ؕ	قَالَ	اَنَا	يُوْسُفُ	وَهٰذَآ
उन्होंने कहा	क्या बेशक तू	अलबत्ता तू है	यूसुफ़	उसने कहा	मैं हूं	यूसुफ़	और ये है

اَخِىْ ؕ	قَدْ	مَنَّ	اللّٰهُ	عَلَيْنَا ؕ	اِنَّهٗ	مَنْ	يَّتَّقِ	وَيَصْبِرْ
मेरा भाई	तहक़ीक़	एहसान किया	अल्लाह ने	हम पर	बेशक	जो	तक़वा करे	और वो सब्र करे

فَاِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُضِيْعُ	اَجْرَ	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿90﴾	قَالُوْا	تَاللّٰهِ	لَقَدْ
तो यक़ीनन	अल्लाह	नहीं वो ज़ाया करता	अजर	मोहसिनीन का	उन्होंने कहा	क़सम अल्लाह की	अलबत्ता तहक़ीक़

اٰثَرَكَ	اللّٰهُ	عَلَيْنَا	وَاِنْ	كُنَّا	لَخٰطِـِٕيْنَ ﴿91﴾	قَالَ	لَا تَثْرِيْبَ
तरजीह दी तुझे	अल्लाह ने	हम पर	और बेशक	थे हम	यक़ीनन ख़ताकार	उसने कहा	नहीं कोई मलामत

عَلَيْكُمُ	الْيَوْمَ ؕ	يَغْفِرُ	اللّٰهُ	لَكُمْ ۫	وَهُوَ	اَرْحَمُ
तुम पर	आज के दिन	माफ़ कर दे	अल्लाह	तुम्हें	और वो	सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है

الرّٰحِمِيْنَ ﴿92﴾	اِذْهَبُوْا	بِقَمِيْصِىْ	هٰذَا	فَاَلْقُوْهُ	عَلٰى وَجْهِ
सब रहम करने वालों से	ले जाओ	क़मीज़ मेरी	ये	फिर डाल दो इसे	चेहरे पर

اَبِىْ	يَاْتِ	بَصِيْرًا ۚ	وَاْتُوْنِىْ	بِاَهْلِكُمْ	اَجْمَعِيْنَ ﴿93﴾ ع	وَلَمَّا
मेरे वालिद के	वो हो जाएगा	देखने वाला	और ले आओ मेरे पास	अपने घर वालों को	सबके सबको	और जब

ع 10 14 4

فَصَلَتِ	الْعِيْرُ	قَالَ	اَبُوْهُمْ	اِنِّىْ	لَاَجِدُ	رِيْحَ	يُوْسُفَ
जुदा हुआ	क़ाफ़िला	कहा	उनके वालिद ने	बेशक मैं	अलबत्ता मैं पाता हूं	ख़ुशबू/हवा	यूसुफ़ की

لَوْلَآ	اَنْ	تُفَنِّدُوْنِ ﴿94﴾	قَالُوْا	تَاللّٰهِ	اِنَّكَ	لَفِيْ ضَلٰلِكَ
अगर ना	ये कि	तुम बहका हुआ कहो मुझे	उन्होंने कहा	क़सम अल्लाह की	बेशक आप	अलबत्ता ग़लती में हैं अपनी

الْقَدِيْمِ ﴿95﴾	فَلَمَّآ	اَنْ	جَآءَ	الْبَشِيْرُ	اَلْقٰىهُ	عَلٰى	وَجْهِهٖ
पुरानी	फिर जब	ये कि	आ गया	ख़ुशख़बरी देने वाला	उसने डाला उसे	ऊपर	उसके चेहरे के

فَارْتَدَّ	بَصِيْرًا ۚ	قَالَ	اَلَمْ	اَقُلْ	لَّكُمْ ۚ	اِنِّيْٓ	اَعْلَمُ
तो हो गया वो	देखने वाला	उसने कहा	क्या नहीं	मैंने कहा था	तुम्हें	बेशक मैं	मैं जानता हूं

مِنَ اللّٰهِ	مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿96﴾	قَالُوْا	يٰٓاَبَانَا	اسْتَغْفِرْ	لَنَا
अल्लाह की तरफ़ से	जो	नहीं तुम जानते	उन्होंने कहा	ऐ हमारे अब्बा जान	बख़्शिश मांगिए	हमारे लिए

ذُنُوْبَنَآ	اِنَّا	كُنَّا	خٰطِـِٕيْنَ ﴿97﴾	قَالَ	سَوْفَ	اَسْتَغْفِرُ	لَكُمْ
हमारे गुनाहों की	बेशक हम	थे हम ही	ख़ताकार	कहा	ज़रूर	मैं बख़्शिश मागूंगा	तुम्हारे लिए

رَبِّيْ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	الْغَفُوْرُ	الرَّحِيْمُ ﴿98﴾	فَلَمَّا	دَخَلُوْا	عَلٰى
अपने रब से	बेशक वो	वो ही है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	फिर जब	वो दाख़िल हुए	ऊपर

يُوْسُفَ	اٰوٰٓى	اِلَيْهِ	اَبَوَيْهِ	وَقَالَ	ادْخُلُوْا	مِصْرَ	اِنْ
यूसुफ़ के	उसने ठिकाना दिया	अपनी तरफ़	अपने वालिदैन को	और कहा	दाख़िल हो जाओ	मिस्र में	अगर

شَآءَ	اللّٰهُ	اٰمِنِيْنَ ﴿99﴾ ؕ	وَرَفَعَ	اَبَوَيْهِ	عَلَى الْعَرْشِ	وَخَرُّوْا
चाहा	अल्लाह ने	अमन वाले होकर	और ऊपर बिठाया	अपने वालिदैन को	तख़्त पर	और वो सब गिर पड़े

لَهٗ	سُجَّدًا ۚ	وَقَالَ	يٰٓاَبَتِ	هٰذَا	تَاْوِيْلُ	رُءْيَايَ
उसके लिए	सज्दा करते हुए	और कहा	ऐ मेरे अब्बा जान	ये है	ताबीर	मेरे ख़्वाब की

مِنْ قَبْلُ ۛ	قَدْ	جَعَلَهَا	رَبِّيْ	حَقًّا ؕ	وَقَدْ	اَحْسَنَ	بِيْٓ
पहले की	तहक़ीक़	कर दिया उसे	मेरे रब ने	सच्चा	और तहक़ीक़	उसने एहसान किया	साथ मेरे

اِذْ	اَخْرَجَنِىْ	مِنَ السِّجْنِ	وَجَآءَ	بِكُمْ	مِّنَ الْبَدْوِ	مِنْۢ بَعْدِ
जब	उसने निकाला मुझे	क़ैद ख़ाने से	और वो ले आया	तुम्हें	सेहरा से	बाद इसके

اَنْ	نَّزَغَ	الشَّيْطٰنُ	بَيْنِىْ	وَبَيْنَ	اِخْوَتِىْ ؕ	اِنَّ	رَبِّىْ
कि	फ़साद डाला	शैतान ने	दर्मियान मेरे	और दर्मियान	मेरे भाईयों के	बेशक	रब मेरा

لَطِيْفٌ	لِّمَا	يَشَآءُ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	الْعَلِيْمُ	الْحَكِيْمُ ﴿100﴾
बेहतरीन तदबीर करने वाला है	उसकी जो	वो चाहता है	बेशक वो	वो ही है	बहुत इल्म वाला	ख़ूब हिक्मत वाला

رَبِّ	قَدْ	اٰتَيْتَنِىْ	مِنَ الْمُلْكِ	وَعَلَّمْتَنِىْ	مِنْ تَاْوِيْلِ
ऐ मेरे रब	तहक़ीक़	दिया तूने मुझे	बादशाहत में से	और सिखाया तूने मुझे	हक़ीक़त में से

الْاَحَادِيْثِ ۚ	فَاطِرَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ۘ	اَنْتَ	وَلِيّٖ
बातों की	ऐ पैदा करने वाले	आसमानों	और ज़मीन के	तू ही	मेरा दोस्त है

فِى الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ۚ	تَوَفَّنِىْ	مُسْلِمًا	وَّاَلْحِقْنِىْ	بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿101﴾
दुनिया में	और आख़िरत में	तू फ़ौत करना मुझे	मुसलमान	और मिला देना मुझे	सालेहीन से

ذٰلِكَ	مِنْ اَنْۢبَآءِ	الْغَيْبِ	نُوْحِيْهِ	اِلَيْكَ ۚ	وَمَا	كُنْتَ	لَدَيْهِمْ
ये	कुछ ख़बरें हैं	ग़ैब की	हम वही करते हैं उसे	तरफ़ आपके	और ना	थे आप	पास उनके

اِذْ	اَجْمَعُوْٓا	اَمْرَهُمْ	وَهُمْ	يَمْكُرُوْنَ ﴿102﴾	وَمَآ	اَكْثَرُ	النَّاسِ
जब	उन्होंने इत्तिफ़ाक़ किया	अपने मामले पर	और वो	वो चालें चल रहे थे	और नहीं	अक्सर	लोग

وَلَوْ	حَرَصْتَ	بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿103﴾	وَمَا	تَسْـَٔلُهُمْ	عَلَيْهِ	مِنْ اَجْرٍ ؕ
और अगरचे	हिरस करें आप	ईमान लाने वाले	और नहीं	आप सवाल करते उनसे	इस पर	किसी अज्र का

اِنْ	هُوَ	اِلَّا	ذِكْرٌ	لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿104﴾ ع	وَكَاَيِّنْ	مِّنْ اٰيَةٍ	فِى السَّمٰوٰتِ
नहीं है	वो	मगर	एक ज़िक्र	तमाम जहान वालों के लिए	और कितनी ही	निशानियां हैं	आसमानों में

ع 11 11 5

وَالْاَرْضِ	يَمُرُّوْنَ	عَلَيْهَا	وَهُمْ	عَنْهَا	مُعْرِضُوْنَ ﴿105﴾	وَمَا
और ज़मीन में	वो गुज़रते हैं	उन पर	और वो	उन से	ऐराज़ करने वाले हैं	और नहीं

يُؤْمِنُ	اَكْثَرُهُمْ	بِاللّٰهِ	اِلَّا	وَهُمْ	مُّشْرِكُوْنَ ﴿106﴾	اَفَاَمِنُوْٓا
ईमान लाते	अक्सर उनके	अल्लाह पर	मगर	इस हाल में कि वो	मुशरिक हैं	क्या भला वो अमन में आ गए

اَنْ	تَاْتِيَهُمْ	غَاشِيَةٌ	مِّنْ عَذَابِ	اللّٰهِ	اَوْ	تَاْتِيَهُمُ
कि	आ जाए उनके पास	एक छा जाने वाली (आफ़त)	अज़ाब से	अल्लाह के	या	आ जाए उनके पास

السَّاعَةُ	بَغْتَةً	وَّهُمْ	لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿107﴾	قُلْ	هٰذِهٖ	سَبِيْلِيْٓ
क़यामत	अचानक	और वो	ना वो शऊर रखते हों	कह दीजिए	ये है	रास्ता मेरा

وقف النبی علیہ السلام

اَدْعُوْٓا	اِلَى اللّٰهِ ۣ	عَلٰى بَصِيْرَةٍ	اَنَا	وَمَنِ	اتَّبَعَنِيْ ؕ	وَسُبْحٰنَ
मैं बुलाता हूं	तरफ़ अल्लाह के	बसीरत पर	मैं	और जो कोई	पैरवी करे मेरी	और पाक है

اللّٰهِ	وَمَآ	اَنَا	مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿108﴾	وَمَآ	اَرْسَلْنَا	مِنْ قَبْلِكَ	اِلَّا
अल्लाह	और नहीं	मैं	शिर्क करने वालों में से	और नहीं	भेजा हमने	आपसे पहले	मगर

رِجَالًا	نُّوْحِيْٓ	اِلَيْهِمْ	مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ؕ	اَفَلَمْ	يَسِيْرُوْا
मर्दों को	हम वही करते थे	तरफ़ उनके	बस्ती वालों में से	क्या फिर नहीं	वो चले फिरे

فِي الْاَرْضِ	فَيَنْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ
ज़मीन में	तो वो देखते	किस तरह	हुआ	अंजाम	उनका जो	इनसे पहले थे

وَلَدَارُ	الْاٰخِرَةِ	خَيْرٌ	لِّلَّذِيْنَ	اتَّقَوْا ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ﴿109﴾
और अलबत्ता घर	आख़िरत का	बेहतर है	उनके लिए जो	तक़वा करें	क्या फिर नहीं	तुम अक़्ल से काम लेते

حَتّٰٓى	اِذَا	اسْتَيْـَٔسَ	الرُّسُلُ	وَظَنُّوْٓا	اَنَّهُمْ	قَدْ	كُذِبُوْا
यहां तक कि	जब	ना उम्मीद हो गए	रसूल	और उन्होंने समझा	कि बेशक वो	यक़ीनन	वो झूठ बोले गए

جَآءَهُمْ	نَصْرُنَا ۙ	فَنُجِّيَ	مَنْ	نَّشَآءُ ؕ	وَلَا	يُرَدُّ	بَأْسُنَا
आ गई उनके पास	मदद हमारी	तो बचा लिया गया	उसको जिसे	हम चाहते थे	और नहीं	फेरा जाता	अज़ाब हमारा

عَنِ الْقَوْمِ	الْمُجْرِمِيْنَ ﴿110﴾	لَقَدْ	كَانَ	فِيْ قَصَصِهِمْ	عِبْرَةٌ
उन लोगों से	जो मुजरिम हैं	अलबत्ता तहक़ीक़	है	इनके क़िस्सों में	इब्रत

لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ؕ	مَا	كَانَ	حَدِيْثًا	يُّفْتَرٰى	وَلٰكِنْ
अक़्ल वालों के लिए	नहीं	है ये	ऐसी बात	जो गढ़ ली गई	और लेकिन

تَصْدِيْقَ	الَّذِيْ	بَيْنَ يَدَيْهِ	وَتَفْصِيْلَ	كُلِّ
तस्दीक़	उस चीज़ की जो	उससे पहले है	और तफ़सील है	हर

شَيْءٍ	وَّهُدًى	وَّرَحْمَةً	لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿111﴾ ع
चीज़ की	और हिदायत	और रहमत है	उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हों

ع 12 7 6

اٰيَاتُهَا: 43 — 13 سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ 96 — رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓرٰ ۚ قف	تِلْكَ	اٰيٰتُ	الْكِتٰبِ ؕ	وَالَّذِيْٓ	اُنْزِلَ	اِلَيْكَ
الٓمّٓرٰ	ये	आयात हैं	किताब की	और जो कुछ	नाज़िल किया गया	तरफ़ आपके

مِنْ رَّبِّكَ	الْحَقُّ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿1﴾	اَللّٰهُ
आपके रब की तरफ़ से	हक़ है	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं वो ईमान लाते	अल्लाह

الَّذِيْ	رَفَعَ	السَّمٰوٰتِ	بِغَيْرِ	عَمَدٍ	تَرَوْنَهَا	ثُمَّ	اسْتَوٰى
वही है जिसने	बुलंद किया	आसमानों को	बग़ैर	सुतूनों के	तुम देखते हो जिन्हें	फिर	वो बुलंद हुआ

عَلَى الْعَرْشِ	وَسَخَّرَ	الشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ ؕ	كُلٌّ	يَّجْرِيْ	لِاَجَلٍ
अर्श पर	और उसने मुसख़्ख़र किया	सूरज	और चांद को	सब	चल रहे हैं	एक वक़्त तक

مُّسَمًّى ؕ	يُدَبِّرُ	الْاَمْرَ	يُفَصِّلُ	الْاٰيٰتِ	لَعَلَّكُمْ	بِلِقَآءِ	رَبِّكُمْ
मुक़र्रर	वो तदबीर करता है	काम की	वो खोलकर बयान करता है	आयात को	ताकि तुम	मुलाक़ात का	अपने रब की

تُوْقِنُوْنَ ②	وَهُوَ	الَّذِیْ	مَدَّ	الْاَرْضَ	وَجَعَلَ	فِیْهَا	رَوَاسِیَ
तुम यक़ीन करो	और वो ही है	जिसने	फैला दिया	ज़मीन को	और बनाए	उसमें	पहाड़

وَ اَنْهٰرًا ؕ	وَمِنْ كُلِّ	الثَّمَرٰتِ	جَعَلَ	فِیْهَا	زَوْجَیْنِ	اثْنَیْنِ
और नहरें	और हर क़िस्म से	फलों की	उसने बनाए	उसमें	जोड़े	दो-दो

یُغْشِی	الَّیْلَ	النَّهَارَ ؕ	اِنَّ	فِیْ ذٰلِكَ	لَاٰیٰتٍ	لِّقَوْمٍ	یَّتَفَكَّرُوْنَ ③
वो ढांपता है	रात को	दिन पर	बेशक	उसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं

وَ فِی الْاَرْضِ	قِطَعٌ	مُّتَجٰوِرٰتٌ	وَّجَنّٰتٌ	مِّنْ اَعْنَابٍ	وَّ زَرْعٌ
और ज़मीन में	टुकड़े हैं	बाहम मिले हुए	और बाग़ात हैं	अंगूरों के	और खेतियां

وَّنَخِیْلٌ	صِنْوَانٌ	وَّغَیْرُ	صِنْوَانٍ	یُّسْقٰی	بِمَآءٍ	وَّاحِدٍ ۫
और खजूर के दरख़्त	जड़ से मिले हुए	और बग़ैर	जड़ से मिले हुए	वो पिलाए जाते हैं	पानी	एक ही

وَ نُفَضِّلُ	بَعْضَهَا	عَلٰی بَعْضٍ	فِی الْاُكُلِ ؕ	اِنَّ	فِیْ ذٰلِكَ
और हम फ़ज़ीलत देते हैं	उनके बाज़ को	बाज़ पर	फलों में	यक़ीनन	इसमें

لَاٰیٰتٍ	لِّقَوْمٍ	یَّعْقِلُوْنَ ④	وَ اِنْ	تَعْجَبْ	فَعَجَبٌ	قَوْلُهُمْ
अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो अक़्ल से काम लेते हैं	और अगर	तुम ताअज्जुब करते हो	तो क़ाबिले ताअज्जुब है	बात उनकी

ءَاِذَا	كُنَّا	تُرٰبًا	ءَاِنَّا	لَفِیْ خَلْقٍ	جَدِیْدٍ ؕ	اُولٰٓئِكَ
क्या जब	हो जाऐंगे हम	मिट्टी	क्या बेशक हम	अलबत्ता पैदाइश में होंगे	नई	यही वो लोग हैं

الَّذِیْنَ	كَفَرُوْا	بِرَبِّهِمْ ۚ	وَ اُولٰٓئِكَ	الْاَغْلٰلُ	فِیْۤ اَعْنَاقِهِمْ ۚ
जिन्होंने	कुफ़्र किया	अपने रब के साथ	और यही लोग हैं	तौक़ होंगे	जिनकी गर्दनों में

وَ اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	النَّارِ ۚ	هُمْ	فِيْهَا	خٰلِدُوْنَ ۝5	وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ
यही लोग हैं	साथी	आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	और वो जल्दी मांगते हैं आपसे

بِالسَّيِّئَةِ	قَبْلَ	الْحَسَنَةِ	وَقَدْ	خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهِمُ	الْمَثُلٰتُ ؕ
बुराई (अज़ाब) को	पहले	भलाई से	हालांकि तहक़ीक़	गुज़र चुकीं	उनसे पहले	इब्रतनाक मिसालें

وَ اِنَّ	رَبَّكَ	لَذُوْ مَغْفِرَةٍ	لِّلنَّاسِ	عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ	وَ اِنَّ	رَبَّكَ
और बेशक	रब आपका	अलबत्ता बख़्शिश वाला है	लोगों के लिए	बावजूद उनके ज़ुल्म के	और बेशक	रब आपका

لَشَدِيْدُ	الْعِقَابِ ۝6	وَ يَقُوْلُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَوْلَآ	اُنْزِلَ
अलबत्ता सख़्त	सज़ा वाला है	और कहते हैं	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	क्यों नहीं	उतारी गई

عَلَيْهِ	اٰيَةٌ	مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	اِنَّمَآ	اَنْتَ	مُنْذِرٌ	وَّ لِكُلِّ	قَوْمٍ
उस पर	कोई निशानी	उसके रब की तरफ़ से	बेशक	आप तो	डराने वाले हैं	और वास्ते हर	क़ौम के

ع 1 7 7

هَادٍ ۝7 ع	اَللّٰهُ	يَعْلَمُ	مَا	تَحْمِلُ	كُلُّ	اُنْثٰى	وَمَا	تَغِيْضُ
एक हादी है	अल्लाह	जानता है	जो कुछ	उठाती है	हर	मादा	और जो कुछ	कमी करते हैं

الْاَرْحَامُ	وَمَا	تَزْدَادُ ؕ	وَ كُلُّ	شَيْءٍ	عِنْدَهٗ	بِمِقْدَارٍ ۝8
रहम	और जो कुछ	वो ज़्यादा करते हैं	और हर	चीज़	उसके पास	साथ एक अंदाज़े के है

عٰلِمُ	الْغَيْبِ	وَالشَّهَادَةِ	الْكَبِيْرُ	الْمُتَعَالِ ۝9	سَوَآءٌ	مِّنْكُمْ
जानने वाला है	ग़ैब	और हाज़िर का	सबसे बड़ा है	बहुत बुलंद है	यकसां/बराबर है	तुम में से

مَّنْ	اَسَرَّ	الْقَوْلَ	وَمَنْ	جَهَرَ	بِهٖ	وَمَنْ	هُوَ	مُسْتَخْفٍ
जो	छुपा कर करे	बात को	और जो कोई	ज़ाहिर करे	उसे	और जो कोई कि	वो	छुपने वाला है

بِالَّيْلِ	وَسَارِبٌ	بِالنَّهَارِ ۝10	لَهٗ	مُعَقِّبٰتٌ	مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ
रात को	और चलने वाला है	दिन को	उसके लिए	पहरेदार हैं	उसके सामने से

وَمِنْ خَلْفِهٖ	يَحْفَظُوْنَهٗ	مِنْ اَمْرِ	اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُغَيِّرُ
और उसके पीछे से	जो हिफ़ाज़त करते हैं उसकी	हुक्म से	अल्लाह के	बेशक	अल्लाह	नहीं तबदील करता

مَا	بِقَوْمٍ	حَتّٰى	يُغَيِّرُوْا	مَا	بِاَنْفُسِهِمْ ؕ	وَاِذَآ	اَرَادَ
जो	किसी क़ौम में है	यहां तक कि	वो बदल दें	उसको जो	उनके दिलों में है	और जब	इरादा करता है

اللّٰهُ	بِقَوْمٍ	سُوْٓءًا	فَلَا	مَرَدَّ	لَهٗ ۚ	وَمَا	لَهُمْ	مِّنْ دُوْنِهٖ
अल्लाह	साथ किसी क़ौम के	किसी बुराई का	तो नहीं	कोई फेरने वाला	उसे	और नहीं	उनके लिए	उसके सिवा

مِنْ وَّالٍ ⑪	هُوَ	الَّذِيْ	يُرِيْكُمُ	الْبَرْقَ	خَوْفًا	وَّطَمَعًا	وَّيُنْشِئُ
कोई मददगार	वो ही है	जो	दिखाता है तुम्हें	बिजली की चमक	ख़ौफ़	और उम्मीद से	और वो उठाता है

السَّحَابَ	الثِّقَالَ ⑫ ۚ	وَيُسَبِّحُ	الرَّعْدُ	بِحَمْدِهٖ	وَالْمَلٰٓئِكَةُ
बादल	बोझल	और तस्बीह करती है	कड़क	साथ उसकी तारीफ़ के	और फ़रिश्ते

مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ	وَيُرْسِلُ	الصَّوَاعِقَ	فَيُصِيْبُ	بِهَا	مَنْ	يَّشَآءُ
उसके ख़ौफ़ से	और वो भेजता है	कड़कती बिजलियों को	फिर वो पहुंचाता है	उन्हें	जिस पर	वो चाहता है

وَهُمْ	يُجَادِلُوْنَ	فِى اللّٰهِ ۚ	وَهُوَ	شَدِيْدُ	الْمِحَالِ ⑬ ؕ	لَهٗ
हालांकि वो	वो झगड़ रहे होते हैं	अल्लाह के बारे में	और वो	सख़्त	क़ुव्वत वाला है	उसी के लिए है

دَعْوَةُ	الْحَقِّ ؕ	وَالَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ	لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ
पुकारना	बरहक़	और जिन्हें	वो पुकारते हैं	उसके सिवा	नहीं वो जवाब देते

لَهُمْ	بِشَيْءٍ	اِلَّا	كَبَاسِطِ	كَفَّيْهِ	اِلَى الْمَآءِ	لِيَبْلُغَ	فَاهُ
उनको	कुछ भी	मगर	मानिंद फैलाने वाले के	अपनी दोनों हथेलियां	तरफ़ पानी के	ताकि वो पहुंचे	उसके मुंह को

وَمَا	هُوَ	بِبَالِغِهٖ ؕ	وَمَا	دُعَآءُ	الْكٰفِرِيْنَ	اِلَّا	فِىْ ضَلٰلٍ ⑭
और नहीं	वो	पहुंचने वाला उसे	और नहीं	दुआ	काफ़िरों की	मगर	गुमराही में

وَّ كَرْهًا	طَوْعًا	وَّالْاَرْضِ	فِى السَّمٰوٰتِ	مَنْ	يَسْجُدُ	وَلِلّٰهِ
और नाख़ुशी से	ख़ुशी से	और ज़मीन में है	आसमानों में	जो कोई	सज्दा करता है	और अल्लाह ही के लिए

السَّمٰوٰتِ	رَّبُّ	مَنْ	قُلْ	وَالْاٰصَالِ ۩ (15)	بِالْغُدُوِّ	وَّظِلٰلُهُمْ
आसमानों	रब	कौन है	कह दीजिए	और शाम	सुबह	और साए उनके

السجدة 2

اَوْلِيَآءَ	مِّنْ دُوْنِهٖٓ	اَفَاتَّخَذْتُمْ	قُلْ	اللّٰهُ ؕ	قُلِ	وَالْاَرْضِ ؕ
हिमायती	उसके सिवा	क्या फिर (भी) बना लिए तुमने	कह दीजिए	अल्लाह	कह दीजिए	और ज़मीन का

يَسْتَوِى	هَلْ	قُلْ	ضَرًّا ؕ	وَّلَا	نَفْعًا	لِاَنْفُسِهِمْ	لَا يَمْلِكُوْنَ
बराबर हो सकता है	क्या	कह दीजिए	किसी नुक़्सान के	और ना	किसी नफ़ा के	अपने नफ़्सों के लिए	नहीं वो मालिक हो सकते

اَمْ	وَالنُّوْرُ ۚ	الظُّلُمٰتُ	تَسْتَوِى	هَلْ	اَمْ	وَالْبَصِيْرُ ۙ	الْاَعْمٰى
या	और रोशनी	अंधेरे	बराबर हो सकते हैं	क्या	या	और देखने वाला	अंधा

الْخَلْقُ	فَتَشَابَهَ	كَخَلْقِهٖ	خَلَقُوْا	شُرَكَآءَ	لِلّٰهِ	جَعَلُوْا
पैदाइश	तो मुश्तबा हो गई	मानिंद उसकी तख़्लीक़ के	उन्होंने पैदा किया	कुछ शरीक	अल्लाह के लिए	उन्होंने बना लिए

الْقَهَّارُ (16)	الْوَاحِدُ	وَّهُوَ	شَىْءٍ	كُلِّ	خَالِقُ	اللّٰهُ	قُلِ	عَلَيْهِمْ ؕ
बहुत ज़बरदस्त है	अकेला है	और वो ही	चीज़ का	हर	ख़ालिक़ है	अल्लाह	कह दीजिए	उन पर

فَاحْتَمَلَ	بِقَدَرِهَا	اَوْدِيَةٌۢ	فَسَالَتْ	مَآءً	مِنَ السَّمَآءِ	اَنْزَلَ
तो उठा लिया	अपने-अपने अंदाज़े से	वादियां	तो बह निकलीं	पानी	आसमान से	उसने उतारा

فِى النَّارِ	عَلَيْهِ	يُوْقِدُوْنَ	وَمِمَّا	رَّابِيًا ؕ	زَبَدًا	السَّيْلُ
आग में	उस पर	वो जलाते हैं	और उसमें से जो	चढ़ा हुआ	झाग	सैलाब ने

يَضْرِبُ	كَذٰلِكَ	مِّثْلُهٗ ؕ	زَبَدٌ	مَتَاعٍ	اَوْ	حِلْيَةٍ	ابْتِغَآءَ
बयान करता है	इसी तरह	उस जैसा	झाग है	बर्तन	या	ज़ेवर	हासिल करने को

اللّٰهُ	الْحَقَّ	وَالْبَاطِلَ ؕ	فَاَمَّا	الزَّبَدُ	فَيَذْهَبُ	جُفَآءً ۚ	وَ اَمَّا
अल्लाह	हक़	और बातिल को	तो रहा	झाग	तो वो चला जाता है	नाकारा हो कर	और लेकिन

مَا	يَنْفَعُ	النَّاسَ	فَيَمْكُثُ	فِى الْاَرْضِ ؕ	كَذٰلِكَ	يَضْرِبُ	اللّٰهُ
जो	नफ़ा देता है	लोगों को	तो वो ठहर जाता है	ज़मीन में	इसी तरह	बयान करता है	अल्लाह

وقف النبی علیہ السلام

الْاَمْثَالَ ؕ ⑰	لِلَّذِيْنَ	اسْتَجَابُوْا	لِرَبِّهِمُ	الْحُسْنٰى ؕ	وَالَّذِيْنَ
मिसालें	उन लोगों के लिए जिन्होंने	क़ुबूल किया (हुक्म)	अपने रब का	भलाई है	और जिन लोगों ने

لَمْ	يَسْتَجِيْبُوْا	لَهٗ	لَوْ	اَنَّ	لَهُمْ	مَّا	فِى الْاَرْضِ	جَمِيْعًا
नहीं	क़ुबूल किया	उसे	काश	कि (होता)	उनके लिए	जो कुछ	ज़मीन में है	सबका सब

وَّمِثْلَهٗ	مَعَهٗ	لَافْتَدَوْا	بِهٖ ؕ	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	سُوْٓءُ
और उसकी मानिंद	साथ उसके	अलबत्ता वो फ़िदये में दे देते	उसको	यही लोग हैं	उनके लिए है	बुरा

ع 2 11 8 النصف

الْحِسَابِ ۙ	وَمَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ؕ	وَبِئْسَ	الْمِهَادُ ⑱ ع	اَفَمَنْ	يَّعْلَمُ
हिसाब	और ठिकाना उनका	जहन्नम है	और वो बहुत ही बुरा	ठिकाना है	क्या फिर जो	जानता है

اَنَّمَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكَ	مِنْ رَّبِّكَ	الْحَقُّ	كَمَنْ	هُوَ	اَعْمٰى ؕ
कि बेशक जो	उतारा गया	तरफ़ आपके	आपके रब की तरफ़ से	हक़ है	उसकी मानिंद है जो	वो	अंधा है

اِنَّمَا	يَتَذَكَّرُ	اُولُوا الْاَلْبَابِ ۙ ⑲	الَّذِيْنَ	يُوْفُوْنَ	بِعَهْدِ اللّٰهِ
बेशक	नसीहत पकड़ते हैं	अक़्ल वाले	वो लोग जो	पूरा करते हैं	अल्लाह के अहद को

وَلَا	يَنْقُضُوْنَ	الْمِيْثَاقَ ۙ ⑳	وَالَّذِيْنَ	يَصِلُوْنَ	مَآ	اَمَرَ	اللّٰهُ
और नहीं	वो तोड़ते	पुख़्ता वादे को	और वो जो	जोड़ते हैं	उसको जो	हुक्म दिया	अल्लाह ने

بِهٖٓ	اَنْ	يُّوْصَلَ	وَيَخْشَوْنَ	رَبَّهُمْ	وَيَخَافُوْنَ	سُوْٓءَ
जिसका	कि	वो जोड़ा जाए	और वो डरते हैं	अपने रब से	और वो डरते हैं	बुरे

الْحِسَابِ ﴿21﴾	وَالَّذِيْنَ	صَبَرُوا	ابْتِغَآءَ	وَجْهِ	رَبِّهِمْ	وَاَقَامُوا
हिसाब से	और वो जिन्होंने	सब्र किया	चाहने के लिए	चेहरा	अपने रब का	और क़ायम की

الصَّلٰوةَ	وَاَنْفَقُوْا	مِمَّا	رَزَقْنٰهُمْ	سِرًّا	وَّعَلَانِيَةً	وَّيَدْرَءُوْنَ
नमाज़	और ख़र्च किया	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	पोशीदा	और ज़ाहिर	और वो दूर करते हैं

بِالْحَسَنَةِ	السَّيِّئَةَ	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	عُقْبَى	الدَّارِ ﴿22﴾	جَنّٰتُ
साथ भलाई के	बुराई को	यही लोग हैं	उनके लिए है	अंजाम	घर का (आख़िरत के)	बाग़ात हैं

عَدْنٍ	يَّدْخُلُوْنَهَا	وَمَنْ	صَلَحَ	مِنْ اٰبَآئِهِمْ	وَاَزْوَاجِهِمْ
हमेशगी के	वो दाख़िल होंगे उन में	और जो कोई	नेक हुआ	उनके आबा ओ अजदाद में से	और उनकी बीवियों में से

وَذُرِّيّٰتِهِمْ	وَالْمَلٰٓئِكَةُ	يَدْخُلُوْنَ	عَلَيْهِمْ	مِّنْ كُلِّ بَابٍ ﴿23﴾	سَلٰمٌ
और उनकी औलाद में से	और फ़रिश्ते	वो दाख़िल होंगे	उन पर	हर दरवाज़े से	सलाम हो

عَلَيْكُمْ	بِمَا	صَبَرْتُمْ	فَنِعْمَ	عُقْبَى	الدَّارِ ﴿24﴾	وَالَّذِيْنَ
तुम पर	बवजह उसके जो	सब्र किया तुमने	तो कितना अच्छा है	अंजाम	(आख़िरत के) घर का	और वो लोग जो

يَنْقُضُوْنَ	عَهْدَ	اللّٰهِ	مِنْ بَعْدِ	مِيْثَاقِهٖ	وَيَقْطَعُوْنَ	مَآ
तोड़ते हैं	अहद को	अल्लाह के	बाद	उसके पक्का करने के	और वो काटते हैं	उसको जो

اَمَرَ	اللّٰهُ	بِهٖٓ	اَنْ	يُّوْصَلَ	وَيُفْسِدُوْنَ	فِى الْاَرْضِ	اُولٰٓئِكَ
हुक्म दिया	अल्लाह ने	जिसका	कि	वो जोड़ा जाए	और वो फ़साद करते हैं	ज़मीन में	यही लोग हैं

لَهُمْ	اللَّعْنَةُ	وَلَهُمْ	سُوْٓءُ	الدَّارِ ﴿25﴾	اَللّٰهُ	يَبْسُطُ	الرِّزْقَ
उनके लिए है	लानत	और उन्हीं के लिए है	बुरा	घर	अल्लाह	फैलाता है	रिज़्क़ को

لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيَقْدِرُ	وَفَرِحُوْا	بِالْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَمَا
जिसके लिए	वो चाहता है	और वो तंग कर देता है	और वो ख़ुश हो गए	ज़िंदगी पर	दुनिया की	और नहीं

ع 3 8 9

الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا	فِي الْاٰخِرَةِ	اِلَّا	مَتَاعٌ ﴿26﴾ ع	وَيَقُوْلُ	الَّذِيْنَ
ज़िंदगी	दुनिया की	आख़िरत (के मुक़ाबले) में	मगर	एक मताअ (हक़ीर)	और कहते हैं	वो लोग जिन्होंने

كَفَرُوْا	لَوْلَآ	اُنْزِلَ	عَلَيْهِ	اٰيَةٌ	مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ	قُلْ	اِنَّ
कुफ़्र किया	क्यों नहीं	उतारी गई	उस पर	कोई निशानी	उसके रब की तरफ़ से	कह दीजिए	बेशक

اللّٰهَ	يُضِلُّ	مَنْ	يَّشَآءُ	وَيَهْدِيْٓ	اِلَيْهِ	مَنْ	اَنَابَ ﴿27﴾ ۘ
अल्लाह	भटकाता है	जिसे	वो चाहता है	और वो हिदायत देता है	अपनी तरफ़	उसे जो	रुजूअ करे

اَلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَتَطْمَئِنُّ	قُلُوْبُهُمْ	بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ	اَلَا	بِذِكْرِ اللّٰهِ	
वो लोग जो	ईमान लाए	और मुत्मइन होते हैं	दिल उनके	अल्लाह के ज़िक्र से	ख़बरदार	अल्लाह के ज़िक्र से	

تَطْمَئِنُّ	الْقُلُوْبُ ﴿28﴾ ؕ	اَلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	طُوْبٰى
मुत्मइन हो जाते हैं	दिल	वो लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	ख़ुशहाली है

لَهُمْ	وَحُسْنُ	مَاٰبٍ ﴿29﴾	كَذٰلِكَ	اَرْسَلْنٰكَ	فِيْٓ اُمَّةٍ	قَدْ
उनके लिए	और उम्दा	ठिकाना	इसी तरह	भेजा हमने आपको	इस उम्मत में	तहक़ीक़

خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهَآ	اُمَمٌ	لِّتَتْلُوَا	عَلَيْهِمُ	الَّذِيْٓ	اَوْحَيْنَآ
गुज़र चुकीं	इससे पहले	कई उम्मतें	ताकि आप पढ़ें	उन पर	वो जो	वही की हमने

اِلَيْكَ	وَهُمْ	يَكْفُرُوْنَ	بِالرَّحْمٰنِ ؕ	قُلْ	هُوَ	رَبِّيْ	لَآ
तरफ़ आपके	और वो	वो कुफ़्र करते हैं	रहमान का	कह दीजिए	वो	रब है मेरा	नहीं

اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ۚ	عَلَيْهِ	تَوَكَّلْتُ	وَاِلَيْهِ	مَتَابِ ﴿30﴾	وَلَوْ
कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही	उसी पर	तवक्कुल किया मैंने	और तरफ़ उसी के	लौटना है मेरा	और अगर

اَنَّ	قُرْاٰنًا	سُيِّرَتْ	بِهِ	الْجِبَالُ	اَوْ	قُطِّعَتْ	بِهِ
यक़ीनन	क़ुरआन होता	(कि) चलाए जाते	उसके ज़रिए	पहाड़	या	फाड़ दी जाती	उसके ज़रिए

الْاَرْضُ	اَوْ	كُلِّمَ	بِهِ	الْمَوْتٰى ط	بَلْ	لِّلّٰهِ	الْاَمْرُ	جَمِيْعًا ط
ज़मीन	या	कलाम किया जाता	उसके ज़रिए	मुर्दों से	बल्कि	अल्लाह ही के लिए है	मामला	सारे का सारा

اَفَلَمْ	يَايْـَٔسِ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اَنْ	لَّوْ	يَشَآءُ	اللّٰهُ
क्या भला नहीं	मायूस हो गए	वो लोग जो	ईमान लाए	कि	अगर	चाहता	अल्लाह

لَهَدَى	النَّاسَ	جَمِيْعًا ط	وَلَا يَزَالُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	تُصِيْبُهُمْ
अलबत्ता वो हिदायत दे देता	लोगों को	सबके सबको	और हमेशा रहेंगे	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	पहुंचती रहेगी उन्हें

بِمَا	صَنَعُوْا	قَارِعَةٌ	اَوْ	تَحُلُّ	قَرِيْبًا	مِّنْ دَارِهِمْ	حَتّٰى
बवजह उसके जो	उन्होंने किया	कोई आफ़त	या	वो उतरती रहेगी	क़रीब ही	उनके घर के	यहां तक कि

ع 4 5 10

يَاْتِيَ	وَعْدُ	اللّٰهِ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُخْلِفُ	الْمِيْعَادَ (31) ع	وَلَقَدِ
आ जाए	वादा	अल्लाह का	बेशक	अल्लाह	नहीं ख़िलाफ़ करता	वादे के	और अलबत्ता तहक़ीक़

اسْتُهْزِئَ	بِرُسُلٍ	مِّنْ قَبْلِكَ	فَاَمْلَيْتُ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	ثُمَّ
मज़ाक़ उड़ाया गया	कई रसूलों का	आपसे क़ब्ल	तो ढील दी मैंने	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	फिर

اَخَذْتُهُمْ قف	فَكَيْفَ	كَانَ	عِقَابِ (32)	اَفَمَنْ	هُوَ	قَآئِمٌ	عَلٰى
पकड़ लिया मैंने उन्हें	तो कैसी	थी	सज़ा मेरी	क्या भला जो	वो	क़ायम/निगरान है	ऊपर

كُلِّ	نَفْسٍ	بِمَا	كَسَبَتْ ج	وَجَعَلُوْا	لِلّٰهِ	شُرَكَآءَ ط	قُلْ
हर	नफ़्स के	साथ उसके जो	उसने कमाई की	और उन्होंने बना रखे हैं	अल्लाह के लिए	कुछ शरीक	कह दीजिए

سَمُّوْهُمْ ط	اَمْ	تُنَبِّـُٔوْنَهٗ	بِمَا	لَا يَعْلَمُ	فِي الْاَرْضِ	اَمْ
नाम लो उनके	क्या	तुम ख़बर दे रहे हो उसे	उसकी जो	नहीं वो जानता	ज़मीन में	या

بِظَاهِرٍ	مِّنَ الْقَوْلِ ط	بَلْ	زُيِّنَ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	مَكْرُهُمْ
बज़ाहिर	बात से	बल्कि	मुज़य्यन कर दी गई	उनके लिए जिन्होंने	कुफ़्र किया	चाल उनकी

وَصُدُّوْا	عَنِ السَّبِيْلِ ط	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَمَا	لَهٗ
और वो रोक दिए गए	रास्ते से	और जिसे	गुमराह कर दे	अल्लाह	तो नहीं	उसके लिए

مِنْ هَادٍ (33)	لَهُمْ	عَذَابٌ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَلَعَذَابُ	الْاٰخِرَةِ
कोई हिदायत देने वाला	उनके लिए	अज़ाब है	ज़िंदगी में	दुनिया की	और अलबत्ता अज़ाब	आख़िरत का

اَشَقُّ ج	وَمَا	لَهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ وَّاقٍ (34)	مَثَلُ	الْجَنَّةِ	الَّتِيْ
ज़्यादा सख़्त है	और नहीं	उनके लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	मिसाल	उस जन्नत की	जिस का

وُعِدَ	الْمُتَّقُوْنَ ط	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ط	اُكُلُهَا	دَآئِمٌ
वादा किए गए	मुत्तक़ी लोग	बहती हैं	उसके नीचे से	नहरें	फल उसके	दायमी हैं

وَّظِلُّهَا ط	تِلْكَ	عُقْبَى	الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا ق صلے	وَّعُقْبَى	الْكٰفِرِيْنَ
और उसका साया (भी)	ये	अंजाम है	उन लोगों का जिन्होंने	तक़्वा किया	और अंजाम	काफ़िरों का

النَّارُ (35)	وَالَّذِيْنَ	اٰتَيْنٰهُمُ	الْكِتٰبَ	يَفْرَحُوْنَ	بِمَآ	اُنْزِلَ
आग है	और वो लोग जो	दी हमने उन्हें	किताब	वो ख़ुश होते हैं	उस पर जो	नाज़िल किया गया

اِلَيْكَ	وَمِنَ الْاَحْزَابِ	مَنْ	يُّنْكِرُ	بَعْضَهٗ ط	قُلْ	اِنَّمَآ
तरफ़ आपके	और कुछ गिरोह हैं	जो	इंकार करते हैं	उसके बाज़ का	कह दीजिए	बेशक

اُمِرْتُ	اَنْ	اَعْبُدَ	اللّٰهَ	وَلَآ	اُشْرِكَ	بِهٖ ط	اِلَيْهِ
हुक्म दिया गया मुझे	कि	मैं इबादत करूं	अल्लाह की	और ना	मैं शरीक ठहराऊं	साथ उस के	तरफ़ उसी के

اَدْعُوْا	وَاِلَيْهِ	مَاٰبِ (36)	وَكَذٰلِكَ	اَنْزَلْنٰهُ	حُكْمًا	عَرَبِيًّا ط
मैं बुलाता हूं	और तरफ़ उसी के	लौटना है मेरा	और इसी तरह	नाज़िल किया हमने इसे	हुक्म/फ़रमान	अरबी ज़बान में

وَلَئِنِ	اتَّبَعْتَ	اَهْوَآءَهُمْ	بَعْدَمَا	جَآءَكَ	مِنَ الْعِلْمِ لا
और अलबत्ता अगर	पैरवी की आपने	उनकी ख़्वाहिशात की	बाद उसके जो	आ गया आपके पास	इल्म में से

ع 5 6 11

مَا	لَكَ	مِنَ اللّٰهِ	مِنْ وَّلِيٍّ	وَّلَا	وَاقٍ ﴿37﴾ ع	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا
नहीं	आपके लिए	अल्लाह की तरफ़ से	कोई दोस्त	और ना	कोई बचाने वाला	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने

رُسُلًا	مِّنْ قَبْلِكَ	وَجَعَلْنَا	لَهُمْ	اَزْوَاجًا	وَّذُرِّيَّةً ؕ	وَمَا
कई रसूलों को	आपसे पहले	और बनाईं हमने	उनके लिए	बीवियां	और औलाद	और नहीं

كَانَ	لِرَسُوْلٍ	اَنْ	يَّاْتِيَ	بِاٰيَةٍ	اِلَّا	بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
था (मुमकिन)	किसी रसूल के लिए	कि	वो ले आए	कोई निशानी	मगर	अल्लाह के इज़्न से

لِكُلِّ اَجَلٍ	كِتَابٌ ﴿38﴾	يَمْحُوا	اللّٰهُ	مَا	يَشَآءُ	وَيُثْبِتُ ۚ
हर मुद्दत के लिए	एक किताब है	मिटाता है	अल्लाह	जो	वो चाहता है	और वो साबित रखता है

وَعِنْدَهٗٓ	اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿39﴾	وَاِنْ مَّا	نُرِيَنَّكَ	بَعْضَ	الَّذِيْ
और उसी के पास है	असल किताब	और अगर	हम दिखाऐं आपको	बाज़	वो जिसका

نَعِدُهُمْ	اَوْ	نَتَوَفَّيَنَّكَ	فَاِنَّمَا	عَلَيْكَ	الْبَلٰغُ	وَعَلَيْنَا
हम वादा करते हैं उनसे	या	हम फ़ौत कर लें आपको	तो बेशक	आपके ज़िम्मे है	पहुंचाना	और हमारे ज़िम्मे है

الْحِسَابُ ﴿40﴾	اَوَلَمْ	يَرَوْا	اَنَّا	نَاْتِي	الْاَرْضَ	نَنْقُصُهَا
हिसाब लेना	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक हम	हम आ रहे हैं	ज़मीन को	हम घटा रहे हैं उसे

مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ	وَاللّٰهُ	يَحْكُمُ	لَا مُعَقِّبَ	لِحُكْمِهٖ ؕ	وَهُوَ	سَرِيْعُ
उसके किनारों से	और अल्लाह	फ़ैसला करता है	नहीं कोई पीछा करने वाला	उसके फ़ैसले का	और वो	जल्द लेने वाला है

الْحِسَابِ ﴿41﴾	وَقَدْ	مَكَرَ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	فَلِلّٰهِ	الْمَكْرُ
हिसाब	और तहक़ीक़	चाल चली	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	तो अल्लाह ही के लिए है	तदबीर

جَمِيْعًا ؕ	يَعْلَمُ	مَا	تَكْسِبُ	كُلُّ	نَفْسٍ ؕ	وَسَيَعْلَمُ	الْكُفّٰرُ
सारी की सारी	वो जानता है	जो	कमाई करता है	हर	नफ़्स	और अनक़रीब जान लेंगे	कुफ़्फ़ार

لِمَنْ	عُقْبَى	الدَّارِ ﴿42﴾	وَيَقُوْلُ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَسْتَ
किस के लिए	अंजाम है	(आख़िरत के) घर का	और कहते हैं	वो लोग जिन्होंने	कुफ़्र किया	नहीं हैं आप

مُرْسَلًا ؕ	قُلْ	كَفٰى	بِاللّٰهِ	شَهِيْدًا	بَيْنِيْ	وَبَيْنَكُمْ ۙ
रसूल	कह दीजिए	काफ़ी है	अल्लाह	गवाह	दर्मियान मेरे	और दर्मियान तुम्हारे

ع 6 6 12

وَمَنْ	عِنْدَهٗ	عِلْمُ	الْكِتٰبِ ﴿43﴾ ع
और वो (भी) जो	(रखता है) अपने पास	इल्म	किताब का

14 سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ 72

ايَاتُهَا: 52 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ	كِتٰبٌ	اَنْزَلْنٰهُ	اِلَيْكَ	لِتُخْرِجَ	النَّاسَ	مِنَ الظُّلُمٰتِ
अलिफ़ लाम रा	(ये) एक किताब है	नाज़िल किया हमने उसे	तरफ़ आपके	ताकि आप निकालें	लोगों को	अँधेरों से

اِلَى النُّوْرِ ۙ	بِاِذْنِ	رَبِّهِمْ	اِلٰى صِرَاطِ	الْعَزِيْزِ	الْحَمِيْدِ ﴿1﴾ ۙ
तरफ़ रोशनी के	साथ इज़्न के	उनके रब के	तरफ़ रास्ते	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब तारीफ़ वाले के

اللّٰهِ	الَّذِيْ	لَهٗ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَوَيْلٌ
अल्लाह के	वो ज़ात	उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ	ज़मीन में है	और हलाकत है

لِّلْكٰفِرِيْنَ	مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدِ ﴿2﴾ ۙ	الَّذِيْنَ	يَسْتَحِبُّوْنَ	الْحَيٰوةَ
काफ़िरों के लिए	सख़्त अज़ाब से	वो लोग जो	तरजीह देते हैं	ज़िन्दगी को

الدُّنْيَا	عَلَى الْاٰخِرَةِ	وَيَصُدُّوْنَ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَيَبْغُوْنَهَا
दुनिया की	आख़िरत पर	और वो रोकते हैं	अल्लाह के रास्ते से	और वो तलाश करते हैं उसमें

عِوَجًا ؕ	اُولٰٓئِكَ	فِيْ ضَلٰلٍ	بَعِيْدٍ ﴿3﴾	وَمَآ	اَرْسَلْنَا	مِنْ رَّسُوْلٍ
टेढ़ापन	यही लोग हैं	गुमराही में	दूर की	और नहीं	भेजा हमने	कोई रसूल

اِلَّا	بِلِسَانِ	قَوْمِهٖ	لِيُبَيِّنَ	لَهُمْ ؕ	فَيُضِلُّ	اللّٰهُ	مَنْ
मगर	ज़बान में	उसकी क़ौम की	ताकि वो वाज़ेह करे	उनके लिए	पस भटका देता है	अल्लाह	जिसे

يَّشَآءُ	وَيَهْدِىْ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ ④	وَلَقَدْ
वो चाहता है	और वो हिदायत देता है	जिसे	वो चाहता है	और वो	बहुत ज़बरदस्त है	बहुत हिक्मत वाला है	और अलबत्ता तहक़ीक़

اَرْسَلْنَا	مُوْسٰى	بِاٰيٰتِنَآ	اَنْ	اَخْرِجْ	قَوْمَكَ	مِنَ الظُّلُمٰتِ	
भेजा हमने	मूसा को	साथ अपनी निशानियों के	कि	निकालो	अपनी क़ौम को	अंधेरों से	

اِلَى النُّوْرِ ۙ	وَذَكِّرْهُمْ	بِاَيّٰمِ اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	فِىْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	
तरफ़ रोशनी के	और याद दिलाओ इन्हें	अल्लाह के दिनों की	बेशक	उसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	

لِّكُلِّ	صَبَّارٍ	شَكُوْرٍ ⑤	وَاِذْ	قَالَ	مُوْسٰى	لِقَوْمِهِ	اذْكُرُوْا
वास्ते हर	बहुत सब्र करने वाले	बहुत शुक्र करने वाले के	और जब	कहा	मूसा ने	अपनी क़ौम से	याद करो

نِعْمَةَ	اللّٰهِ	عَلَيْكُمْ	اِذْ	اَنْجٰىكُمْ	مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ	يَسُوْمُوْنَكُمْ
नेअमत	अल्लाह की	(जो) तुम पर है	जब	उसने निजात दी तुम्हें	आले फ़िरऔन से	वो चखाते थे तुम्हें

سُوْٓءَ	الْعَذَابِ	وَيُذَبِّحُوْنَ	اَبْنَآءَكُمْ	وَيَسْتَحْيُوْنَ	نِسَآءَكُمْ ؕ	
बुरा	अज़ाब	और ज़िबह करते थे	तुम्हारे बेटों को	और वो ज़िंदा छोड़ देते थे	तुम्हारी औरतों को	

وَفِىْ ذٰلِكُمْ	بَلَآءٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	عَظِيْمٌ ⑥ ع	وَاِذْ	تَاَذَّنَ	رَبُّكُمْ	
और इसमें	आज़माइश थी	तुम्हारे रब की तरफ़ से	बहुत बड़ी	और जब	आगाह कर दिया	तुम्हारे रब ने	

ع 1 6 13

لَئِنْ	شَكَرْتُمْ	لَاَزِيْدَنَّكُمْ	وَلَئِنْ	كَفَرْتُمْ	اِنَّ	عَذَابِىْ	
अलबत्ता अगर	शुक्र किया तुमने	अलबत्ता मैं ज़रूर ज़्यादा दूंगा तुम्हें	और अलबत्ता अगर	नाशुक्री की तुमने	बेशक	अज़ाब मेरा	

لَشَدِيْدٌ ⑦	وَقَالَ	مُوْسٰٓى	اِنْ	تَكْفُرُوْٓا	اَنْتُمْ	وَمَنْ	فِى الْاَرْضِ
अलबत्ता सख़्त है	और कहा	मूसा ने	अगर	तुम नाशुक्री करो	तुम	और जो	ज़मीन में है

جَمِيْعًا ؕ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	لَغَنِىٌّ	حَمِيْدٌ ⑧	اَلَمْ	يَاْتِكُمْ	نَبَؤُا
सबके सब	तो बेशक	अल्लाह	अलबत्ता बहुत बेनियाज़ है	बहुत तारीफ़ वाला है	क्या नहीं	आई तुम्हारे पास	ख़बर

الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	قَوْمِ	نُوْحٍ	وَّعَادٍ	وَّثَمُوْدَ ۛ	وَالَّذِيْنَ
उन लोगों की जो	तुम से पहले थे	क़ौम	नूह	और आद	और समूद	और उनकी जो

مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛ	لَا يَعْلَمُهُمْ	اِلَّا	اللّٰهُ ؕ	جَآءَتْهُمْ	رُسُلُهُمْ
उनके बाद थे	नहीं जानता उन्हें	मगर	अल्लाह	आए उनके पास	रसूल उनके

بِالْبَيِّنٰتِ	فَرَدُّوْٓا	اَيْدِيَهُمْ	فِىْٓ اَفْوَاهِهِمْ	وَقَالُوْٓا	اِنَّا
साथ वाज़ेह दलाइल के	तो उन्होंने फेर दिया	अपने हाथों को	अपने मुंहों में	और कहा	बेशक हम

كَفَرْنَا	بِمَآ	اُرْسِلْتُمْ	بِهٖ	وَاِنَّا	لَفِىْ شَكٍّ	مِّمَّا
इंकार करते हैं हम	उसका जो	भेजे गए तुम	साथ जिसके	और बेशक हम	अलबत्ता शक में हैं	उस चीज़ से जो

تَدْعُوْنَنَآ	اِلَيْهِ	مُرِيْبٍ ⑨	قَالَتْ	رُسُلُهُمْ	اَفِى اللّٰهِ	شَكٌّ
तुम बुलाते हो हमें	तरफ़ उसके	जो बेचैन करने वाला है	कहा	उनके रसूलों ने	क्या अल्लाह के बारे में	शक है

فَاطِرِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	يَدْعُوْكُمْ	لِيَغْفِرَ	لَكُمْ
जो पैदा करने वाला है	आसमानों	और ज़मीन का	वो बुलाता है तुम्हें	ताकि वो बख़्श दे	तुम्हारे लिए

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ	وَيُؤَخِّرَكُمْ	اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ	قَالُوْٓا	اِنْ
तुम्हारे गुनाहों को	और वो मोहलत दे तुम्हें	एक मुक़र्रर मुद्दत तक	उन्होंने कहा	नहीं हो

اَنْتُمْ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُنَا ؕ	تُرِيْدُوْنَ	اَنْ	تَصُدُّوْنَا	عَمَّا
तुम	मगर	एक इंसान	हम जैसे	तुम चाहते हो	कि	तुम रोको हमें	उससे जो

كَانَ	يَعْبُدُ	اٰبَآؤُنَا	فَاْتُوْنَا	بِسُلْطٰنٍ	مُّبِيْنٍ ⑩	قَالَتْ
थे	इबादत करते	आबा ओ अजदाद हमारे	पस ले आओ हमारे पास	कोई दलील	वाज़ेह	कहा

لَهُمْ	رُسُلُهُمْ	اِنْ	نَّحْنُ	اِلَّا	بَشَرٌ	مِّثْلُكُمْ	وَلٰكِنَّ
उन्हें	उनके रसूलों ने	नहीं हैं	हम	मगर	एक इन्सान	तुम जैसे	और लेकिन

اللّٰهَ	يَمُنُّ	عَلٰى مَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ ؕ	وَمَا	كَانَ	لَنَآ
अल्लाह	एहसान करता है	जिस पर	वो चाहता है	अपने बन्दों में से	और नहीं	है (मुमकिन)	हमारे लिए

اَنْ	نَّاْتِيَكُمْ	بِسُلْطٰنٍ	اِلَّا	بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ	وَعَلَى اللّٰهِ
कि	हम ले आऐं तुम्हारे पास	कोई दलील	मगर	अल्लाह के इज़्न से	और अल्लाह ही पर

فَلْيَتَوَكَّلِ	الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪	وَمَا	لَنَآ	اَلَّا	نَتَوَكَّلَ	عَلَى اللّٰهِ
पस चाहिए कि तवक्कल करें	ईमान लाने वाले	और क्या है	हमें	कि ना	हम तवक्कल करें	अल्लाह पर

وَقَدْ	هَدٰىنَا	سُبُلَنَا ؕ	وَلَنَصْبِرَنَّ	عَلٰى مَآ	اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ
हालांकि तहक़ीक़	हिदायत दी उसने हमें	हमारे रास्तों की	अलबत्ता हम ज़रूर सब्र करेंगे	उस पर जो	अज़ियत दे रहे हो तुम हमें

ع 2 6 14

وَعَلَى اللّٰهِ	فَلْيَتَوَكَّلِ	الْمُتَوَكِّلُوْنَ ⑫ ع	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
और अल्लाह ही पर	पस चाहिए कि तवक्कल करें	तवक्कल करने वाले	और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया

لِرُسُلِهِمْ	لَنُخْرِجَنَّكُمْ	مِّنْ اَرْضِنَآ	اَوْ	لَتَعُوْدُنَّ	فِيْ مِلَّتِنَا ؕ
अपने रसूलों को	अलबत्ता हम ज़रूर निकाल देंगे तुम्हें	अपनी ज़मीन से	या	अलबत्ता तुम ज़रूर लौटोगे	हमारी मिल्लत में

فَاَوْحٰٓى	اِلَيْهِمْ	رَبُّهُمْ	لَنُهْلِكَنَّ	الظّٰلِمِيْنَ ⑬ لا	وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ
तो वही की	तरफ़ उनके	उनके रब ने	अलबत्ता हम ज़रूर हलाक कर देंगे	जालिमों को	और अलबत्ता हम ज़रूर आबाद कर देंगे तुम्हें

الْاَرْضَ	مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ	ذٰلِكَ	لِمَنْ	خَافَ	مَقَامِيْ
ज़मीन में	बाद इनके	ये	उसके लिए है जो	डरे	मेरे सामने खड़ा होने से

وَخَافَ	وَعِيْدِ ⑭	وَاسْتَفْتَحُوْا	وَخَابَ	كُلُّ	جَبَّارٍ	عَنِيْدٍ ⑮ لا
और वो डरे	मेरी वईद से	और उन्होंने फ़ैसला चाहा	और नामुराद हुआ	हर	सरकश	अनाद रखने वाला

مِّنْ وَّرَآئِهٖ	جَهَنَّمُ	وَيُسْقٰى	مِنْ مَّآءٍ	صَدِيْدٍ ﴿16﴾	يَّتَجَرَّعُهٗ
उसके आगे	जहन्नम है	और वो पिलाया जाएगा	पानी में से	पीप वाले	वो घूंट-घूंट पियेगा उसे

وَلَا	يَكَادُ	يُسِيْغُهٗ	وَيَاْتِيْهِ	الْمَوْتُ	مِنْ كُلِّ مَكَانٍ	وَّمَا
और नहीं	वो क़रीब होगा	कि वो निगल सके उसे	और आएगी उसके पास	मौत	हर जगह से	और नहीं(होगा)

هُوَ	بِمَيِّتٍ ؕ	وَمِنْ وَّرَآئِهٖ	عَذَابٌ	غَلِيْظٌ ﴿17﴾	مَثَلُ	الَّذِيْنَ
वो	मरने वाला	और उसके आगे	अज़ाब है	सख़्त	मिसाल	उन लोगों की जिन्होंने

كَفَرُوْا	بِرَبِّهِمْ	اَعْمَالُهُمْ	كَرَمَادِ	اشْتَدَّتْ	بِهِ	الرِّيْحُ
कुफ़्र किया	अपने रब से	आमाल उनके	उस राख की तरह हैं	कि सख़्त चली हो	उस पर	हवा

فِيْ يَوْمٍ	عَاصِفٍ ؕ	لَا يَقْدِرُوْنَ	مِمَّا	كَسَبُوْا	عَلٰى شَيْءٍ ؕ
एक दिन में	तेज़ हवा के	ना वो क़ुदरत रखेंगे	उसमें से जो	उन्होंने कमाई की	किसी चीज़ पर

ذٰلِكَ	هُوَ	الضَّلٰلُ	الْبَعِيْدُ ﴿18﴾	اَلَمْ	تَرَ	اَنَّ	اللّٰهَ	خَلَقَ
यही है	वो	गुमराही	दूर की	क्या नहीं	आपने देखा	कि बेशक	अल्लाह ने	पैदा किया

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	بِالْحَقِّ ؕ	اِنْ	يَّشَاْ	يُذْهِبْكُمْ	وَيَاْتِ	بِخَلْقٍ
आसमानों	और ज़मीन को	साथ हक़ के	अगर	वो चाहे	वो ले जाए तुम सबको	और वो ले आए	कोई मख़लूक़

جَدِيْدٍ ﴿19﴾	وَّمَا	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	بِعَزِيْزٍ ﴿20﴾	وَبَرَزُوْا	لِلّٰهِ
नई	और नहीं	ये	अल्लाह पर	कुछ मुश्किल	और वो सामने होंगे	अल्लाह के

جَمِيْعًا	فَقَالَ	الضُّعَفٰٓؤُا	لِلَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْٓا	اِنَّا	كُنَّا	لَكُمْ
सबके सब	तो कहेंगे	कमज़ोर लोग	उनसे जिन्होंने	तकब्बुर किया	बेशक हम	थे हम	तुम्हारे लिए

تَبَعًا	فَهَلْ	اَنْتُمْ	مُّغْنُوْنَ	عَنَّا	مِنْ عَذَابِ	اللّٰهِ
ताबेअ	तो क्या	तुम	बचाने वाले हो	हमें	अज़ाब से	अल्लाह के

سَلٰمٌ ﴿23﴾	اَلَمْ	تَرَ	كَيْفَ	ضَرَبَ	اللّٰهُ	مَثَلًا	كَلِمَةً	طَيِّبَةً
सलाम (होगा)	क्या नहीं	आपने देखा	किस तरह	बयान की	अल्लाह ने	मिसाल	कलमा	तय्यबा/पाकीज़ा की

كَشَجَرَةٍ	طَيِّبَةٍ	اَصْلُهَا	ثَابِتٌ	وَّفَرْعُهَا	فِي السَّمَآءِ ﴿24﴾	تُؤْتِيْٓ
मानिंद दरख़्त	पाकीज़ा के	जड़ उसकी	मज़बूत है	और शाख़ें उसकी	आसमान में हैं	वो देता है

اُكُلَهَا	كُلَّ	حِيْنٍ	بِاِذْنِ	رَبِّهَا ؕ	وَيَضْرِبُ	اللّٰهُ	الْاَمْثَالَ
फल अपना	हर	वक़्त	इज़्न से	अपने रब के	और बयान करता है	अल्लाह	मिसालें

لِلنَّاسِ	لَعَلَّهُمْ	يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿25﴾	وَمَثَلُ	كَلِمَةٍ	خَبِيْثَةٍ	كَشَجَرَةٍ
लोगों के लिए	शायद कि वो	वो नसीहत पकड़ें	और मिसाल	कलमा	ख़बीसा/नापाक की	मानिंद दरख़्त

خَبِيْثَةِ	اجْتُثَّتْ	مِنْ فَوْقِ	الْاَرْضِ	مَا	لَهَا	مِنْ قَرَارٍ ﴿26﴾
नापाक के	जो उखाड़ा गया	ऊपर से	ज़मीन के	नहीं	उसके लिए	कोई क़रार

يُثَبِّتُ	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِالْقَوْلِ	الثَّابِتِ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا
साबित रखता है	अल्लाह	उन लोगों को जो	ईमान लाए	साथ बात	मज़बूत के	ज़िंदगी में	दुनिया की

وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ	وَيُضِلُّ	اللّٰهُ	الظّٰلِمِيْنَ ۙ	وَيَفْعَلُ	اللّٰهُ	مَا
और आख़िरत में	और भटकाता है	अल्लाह	ज़ालिमों को	और करता है	अल्लाह	जो

ع 4 6 16

يَشَآءُ ﴿27﴾ ع	اَلَمْ	تَرَ	اِلَى الَّذِيْنَ	بَدَّلُوْا	نِعْمَتَ	اللّٰهِ	كُفْرًا
वो चाहता है	क्या नहीं	आपने देखा	तरफ़ उनके जिन्होंने	बदल डाला	नेअमत को	अल्लाह की	कुफ़्र/नाशुक्री से

وَّاَحَلُّوْا	قَوْمَهُمْ	دَارَ	الْبَوَارِ ﴿28﴾	جَهَنَّمَ ۚ	يَصْلَوْنَهَا ؕ	وَبِئْسَ
और उन्होंने ला उतारा	अपनी क़ौम को	घर में	हलाकत के	जहन्नम में	वो जलेंगे उसमें	और कितना बुरा है

الْقَرَارُ ﴿29﴾	وَجَعَلُوْا	لِلّٰهِ	اَنْدَادًا	لِّيُضِلُّوْا	عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ	قُلْ
ठिकाना	और उन्होंने बना लिए	अल्लाह के लिए	कुछ शरीक	ताकि वो भटका दें	उसके रास्ते से	कह दीजिए

مِنْ شَيْءٍ ؕ	قَالُوْا	لَوْ	هَدٰىنَا	اللّٰهُ	لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ	سَوَآءٌ
कुछ भी	वो कहेंगे	अगर	हिदायत देता हमें	अल्लाह	अलबत्ता हिदायत करते हम तुम्हें	यकसां/बराबर है

ع 3 9 15

عَلَيْنَآ	اَجَزِعْنَآ	اَمْ	صَبَرْنَا	مَا	لَنَا	مِنْ مَّحِيْصٍ (21) ع
हम पर	ख़्वाह जज़ा व फ़ज़ा करें हम	या	सब्र करें हम	नहीं है	हमारे लिए	कोई पनाहगाह

وَقَالَ	الشَّيْطٰنُ	لَمَّا	قُضِيَ	الْاَمْرُ	اِنَّ	اللّٰهَ	وَعَدَكُمْ
और कहेगा	शैतान	जब	फ़ैसला कर दिया जाएगा	काम का	बेशक	अल्लाह ने	वादा किया तुमसे

وَعْدَ	الْحَقِّ	وَوَعَدْتُّكُمْ	فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ	وَمَا	كَانَ	لِيَ
वादा	सच्चा	और वादा किया मैंने तुमसे	तो ख़िलाफ़ किया मैंने तुमसे	और ना	था	मेरे लिए

عَلَيْكُمْ	مِّنْ سُلْطٰنٍ	اِلَّآ	اَنْ	دَعَوْتُكُمْ	فَاسْتَجَبْتُمْ	لِيْ ج
तुम पर	कोई ज़ोर	मगर	ये कि	बुलाया मैंने तुम्हें	पस क़ुबूल कर लिया तुमने	मेरे लिए

فَلَا	تَلُوْمُوْنِيْ	وَلُوْمُوْٓا	اَنْفُسَكُمْ ؕ	مَآ	اَنَا	بِمُصْرِخِكُمْ	وَمَآ
पस ना	तुम मलामत करो मुझे	बल्कि मलामत करो	अपने नफ़्सों को	नहीं	मैं	फ़रियादरसी करने वाला तुम्हारी	और ना

اَنْتُمْ	بِمُصْرِخِيَّ ؕ	اِنِّيْ	كَفَرْتُ	بِمَآ	اَشْرَكْتُمُوْنِ
तुम	फ़रियादरसी करने वाले हो मेरी	बेशक मैं	इंकार किया मैंने	उसका जो	शरीक ठहराया तुमने मुझे

مِنْ قَبْلُ ؕ	اِنَّ	الظّٰلِمِيْنَ	لَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (22)	وَاُدْخِلَ
इससे पहले	बेशक	ज़ालिम लोग	उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	और दाख़िल किए जाएंगे

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	جَنّٰتٍ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا
वो लोग जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	बाग़ात में	बहती हैं	उनके नीचे से

الْاَنْهٰرُ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا	بِاِذْنِ	رَبِّهِمْ ؕ	تَحِيَّتُهُمْ	فِيْهَا
नहरें	हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	इज़्न से	अपने रब के	दुआ-ए-मुलाक़ात उनकी	उनमें

تَمَتَّعُوْا	فَاِنَّ	مَصِيْرَكُمْ	اِلَى النَّارِ ﴿30﴾	قُلْ	لِّعِبَادِىَ	الَّذِيْنَ
तुम फ़ायदे उठा लो	तो बेशक	लौटना है तुम्हारा	तरफ़ आग के	कह दीजिए	मेरे बंदों से	वो जो

اٰمَنُوْا	يُقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	وَيُنْفِقُوْا	مِمَّا	رَزَقْنٰهُمْ	سِرًّا
ईमान लाए	वो क़ायम करें	नमाज़	और वो ख़र्च करें	उसमें से जो	रिज़्क़ दिया हमने उन्हें	छुप कर

وَّعَلَانِيَةً	مِّنْ قَبْلِ	اَنْ	يَّاْتِىَ	يَوْمٌ	لَّا	بَيْعٌ	فِيْهِ
और ज़ाहिरी तौर पर	इससे पहले	कि	आ जाए	वो दिन	नहीं	कोई तिजारत	उस में

وَلَا	خِلٰلٌ ﴿31﴾	اَللّٰهُ	الَّذِىْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	وَاَنْزَلَ
और ना	कोई दोस्ती	अल्लाह	वो है जिसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	और उसने उतारा

مِنَ السَّمَآءِ	مَآءً	فَاَخْرَجَ	بِهٖ	مِنَ الثَّمَرٰتِ	رِزْقًا	لَّكُمْ ۚ
आसमान से	पानी	फिर उसने निकाला	साथ उसके	फलों में से	रिज़्क़	तुम्हारे लिए

وَسَخَّرَ	لَكُمُ	الْفُلْكَ	لِتَجْرِىَ	فِى الْبَحْرِ	بِاَمْرِهٖ ۚ	وَسَخَّرَ
और उसने मुसख़्ख़र कीं	तुम्हारे लिए	कश्तियां	ताकि वो चलें	समुन्दर में	उसके हुक्म से	और उसने मुसख़्ख़र कीं

لَكُمُ	الْاَنْهٰرَ ۚ ﴿32﴾	وَسَخَّرَ	لَكُمُ	الشَّمْسَ	وَالْقَمَرَ	دَآئِبَيْنِ ۚ
तुम्हारे लिए	नहरें	और उसने मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	सूरज	और चाँद को	लगातार चलने वाले

وَسَخَّرَ	لَكُمُ	الَّيْلَ	وَالنَّهَارَ ۚ ﴿33﴾	وَاٰتٰىكُمْ	مِّنْ كُلِّ	مَا
और उसने मुसख़्ख़र किया	तुम्हारे लिए	रात	और दिन को	और उसने दी तुम्हें	हर वो चीज़	जो

سَاَلْتُمُوْهُ ؕ	وَاِنْ	تَعُدُّوْا	نِعْمَتَ	اللّٰهِ	لَا تُحْصُوْهَا ؕ	اِنَّ
मांगी तुमने उस से	और अगर	तुम गिनने लगो	नेअमतें	अल्लाह की	नहीं तुम शुमार कर सकते उन्हें	बेशक

الْاِنْسَانَ	لَظَلُوْمٌ	كَفَّارٌ ﴿34﴾ ع	وَاِذْ	قَالَ	اِبْرٰهِيْمُ	رَبِّ	اجْعَلْ
इंसान	अलबत्ता बड़ा ज़ालिम है	बड़ा नाशुक्रा है	और जब	कहा	इब्राहीम ने	ऐ मेरे रब	बना दे

ع 5 7 17

هٰذَا	الْبَلَدَ	اٰمِنًا	وَّاجْنُبْنِيْ	وَبَنِيَّ	اَنْ	نَّعْبُدَ	الْاَصْنَامَ ﴿35﴾
इस	शहर को	अमन वाला	और बचा ले मुझे	और मेरी औलाद को	(इससे) कि	हम इबादत करें	बुतों की

رَبِّ	اِنَّهُنَّ	اَضْلَلْنَ	كَثِيْرًا	مِّنَ النَّاسِ ۚ	فَمَنْ	تَبِعَنِيْ
ऐ मेरे रब	बेशक उन्होंने	गुमराह कर दिया	कसीर तादाद को	लोगों में से	तो जो कोई	पैरवी करे मेरी

فَاِنَّهٗ	مِنِّيْ ۚ	وَمَنْ	عَصَانِيْ	فَاِنَّكَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿36﴾
तो बेशक वो	मुझसे है	और जो कोई	नाफ़रमानी करे मेरी	तो बेशक तू ही है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

رَبَّنَآ	اِنِّيْٓ	اَسْكَنْتُ	مِنْ ذُرِّيَّتِيْ	بِوَادٍ	غَيْرِ	ذِيْ زَرْعٍ
ऐ हमारे रब	बेशक मैं	बसाया मैंने	अपनी कुछ औलाद को	वादी में	बग़ैर	खेती वाली

عِنْدَ	بَيْتِكَ	الْمُحَرَّمِ ۙ	رَبَّنَا	لِيُقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ	فَاجْعَلْ
पास	तेरे घर के	हुरमत वाले	ऐ हमारे रब	ताकि वो क़ायम करें	नमाज़	पस कर दे

اَفْئِدَةً	مِّنَ النَّاسِ	تَهْوِيْٓ	اِلَيْهِمْ	وَارْزُقْهُمْ	مِّنَ الثَّمَرٰتِ
दिलों को	लोगों के	वो माइल हों	तरफ़ उनके	और रिज़्क़ दे उन्हें	फलों में से

لَعَلَّهُمْ	يَشْكُرُوْنَ ﴿37﴾	رَبَّنَآ	اِنَّكَ	تَعْلَمُ	مَا	نُخْفِيْ	وَمَا
ताकि वो	वो शुक्र अदा करें	ऐ हमारे रब	बेशक तू	तू जानता है	जो कुछ	हम छुपाते हैं	और जो कुछ

نُعْلِنُ ۭ	وَمَا	يَخْفٰى	عَلَى اللّٰهِ	مِنْ شَيْءٍ	فِي الْاَرْضِ	وَلَا
हम ज़ाहिर करते हैं	और नहीं	छुप सकती	अल्लाह पर	कोई चीज़	ज़मीन में	और ना

فِي السَّمَآءِ ﴿38﴾	اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِيْ	وَهَبَ	لِيْ	عَلَى الْكِبَرِ
आसमान में	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	वो जिसने	अता किए	मुझे	बावजूद बुढ़ापे के

اِسْمٰعِيْلَ	وَاِسْحٰقَ ۭ	اِنَّ	رَبِّيْ	لَسَمِيْعُ	الدُّعَآءِ ﴿39﴾	رَبِّ
इस्माईल	और इसहाक़	बेशक	मेरा रब	अलबत्ता ख़ूब सुनने वाला है	दुआ को	ऐ मेरे रब

اجْعَلْنِيْ	مُقِيْمَ	الصَّلٰوةِ	وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ	رَبَّنَا	وَتَقَبَّلْ	دُعَآءِ ﴿40﴾
बना मुझे	क़ायम करने वाला	नमाज़ का	और मेरी औलाद को	ऐ हमारे रब	और तू क़ुबूल कर ले	दुआ मेरी

رَبَّنَا	اغْفِرْ	لِيْ	وَلِوَالِدَيَّ	وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ	يَوْمَ	يَقُوْمُ
ऐ हमारे रब	बख़्श दे	मुझे	और मेरे वालिदैन को	और मोमिनों को	जिस दिन	क़ायम होगा

ع 7 18

الْحِسَابُ ﴿41﴾ ع	وَلَا	تَحْسَبَنَّ	اللّٰهَ	غَافِلًا	عَمَّا	يَعْمَلُ	الظّٰلِمُوْنَ ۬
हिसाब	और ना	तुम हरगिज़ समझो	अल्लाह को	ग़ाफ़िल	उससे जो	अमल करते हैं	ज़ालिम लोग

اِنَّمَا	يُؤَخِّرُهُمْ	لِيَوْمٍ	تَشْخَصُ	فِيْهِ	الْاَبْصَارُ ﴿42﴾ لا	مُهْطِعِيْنَ
बेशक	वो ढील दे रहा है उन्हें	उस दिन के लिए	पथरा जाऐंगी	जिसमें	निगाहें	तेज़ी से दौड़ने वाले

مُقْنِعِيْ	رُءُوْسِهِمْ	لَا يَرْتَدُّ	اِلَيْهِمْ	طَرْفُهُمْ ج	وَاَفْـِٕدَتُهُمْ
ऊपर उठाए हुए	अपने सरों को	नहीं लौटेगी	तरफ़ उनके	निगाह उनकी	और दिल उनके

هَوَآءٌ ﴿43﴾ ط	وَاَنْذِرِ	النَّاسَ	يَوْمَ	يَاْتِيْهِمُ	الْعَذَابُ	فَيَقُوْلُ
ख़ाली होंगे	और ख़बरदार कीजिए	लोगों को	जिस दिन	आएगा उनके पास	अज़ाब	तो कहेंगे

الَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	رَبَّنَآ	اَخِّرْنَآ	اِلٰٓى اَجَلٍ	قَرِيْبٍ لا	نُّجِبْ
वो लोग जिन्होंने	ज़ुल्म किया	ऐ हमारे रब	मोहलत दे हमें	एक मुद्दत तक	क़रीब की	हम क़ुबूल कर लें

دَعْوَتَكَ	وَنَتَّبِعِ	الرُّسُلَ ط	اَوَلَمْ	تَكُوْنُوْٓا	اَقْسَمْتُمْ	مِّنْ قَبْلُ
तेरी दावत	और हम पैरवी करें	रसूलों की	क्या नहीं	थे तुम	क़समें खाते तुम	इससे पहले

مَا	لَكُمْ	مِّنْ زَوَالٍ ﴿44﴾ لا	وَّسَكَنْتُمْ	فِيْ مَسٰكِنِ	الَّذِيْنَ
नहीं है	तुम्हारे लिए	कोई ज़वाल	और ठहरे रहे तुम	घरों में	उन लोगों के जिन्होंने

ظَلَمُوْٓا	اَنْفُسَهُمْ	وَتَبَيَّنَ	لَكُمْ	كَيْفَ	فَعَلْنَا	بِهِمْ
ज़ुल्म किया	अपनी जानों पर	और वाज़ेह हो गया	तुम्हारे लिए	कैसा	(सुलूक) किया हमने	साथ उनके

وَضَرَبْنَا	لَكُمُ	الْاَمْثَالَ ﴿45﴾	وَقَدْ	مَكَرُوْا	مَكْرَهُمْ	وَعِنْدَ
और बयान कर दीं हमने	तुम्हारे लिए	मिसालें	और तहक़ीक़	उन्होंने चाल चली	अपनी चाल	और पास है

اللّٰهِ	مَكْرُهُمْ ؕ	وَاِنْ	كَانَ	مَكْرُهُمْ	لِتَزُوْلَ	مِنْهُ	الْجِبَالُ ﴿46﴾
अल्लाह के	उनकी चाल (का तोड़)	और नहीं	थी	चाल उनकी	कि टल जाऐं	उससे	पहाड़

فَلَا	تَحْسَبَنَّ	اللّٰهَ	مُخْلِفَ	وَعْدِهٖ	رُسُلَهٗ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
तो ना	तुम हरगिज़ समझो	अल्लाह को	ख़िलाफ़ करने वाला	अपने वादे का	अपने रसूलों से	बेशक	अल्लाह

عَزِيْزٌ	ذُو انْتِقَامٍ ﴿47﴾ ؕ	يَوْمَ	تُبَدَّلُ	الْاَرْضُ	غَيْرَ	الْاَرْضِ
बहुत ज़बरदस्त है	इंतिक़ाम लेने वाला है	जिस दिन	बदल दी जाएगी	ज़मीन	सिवाय	इस ज़मीन के

وَالسَّمٰوٰتُ	وَبَرَزُوْا	لِلّٰهِ	الْوَاحِدِ	الْقَهَّارِ ﴿48﴾	وَتَرَى
और आसमान (भी)	और वो सामने आ जाऐंगे	अल्लाह के	जो अकेला है	बहुत ज़बरदस्त है	और आप देखेंगे

الْمُجْرِمِيْنَ	يَوْمَئِذٍ	مُّقَرَّنِيْنَ	فِي الْاَصْفَادِ ﴿49﴾ ۚ	سَرَابِيْلُهُمْ
मुजरिमों को	उस दिन	जकड़े हुए होंगे	बेड़ियों में	कुर्ते उनके

مِّنْ قَطِرَانٍ	وَّتَغْشٰى	وُجُوْهَهُمُ	النَّارُ ﴿50﴾ ۙ	لِيَجْزِيَ	اللّٰهُ	كُلَّ
तारकोल के होंगे	और ढांपे हुए होगी	उनके चेहरों को	आग	ताकि बदला दे	अल्लाह	हर

نَفْسٍ	مَّا	كَسَبَتْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ﴿51﴾	هٰذَا
नफ़्स को	उसका जो	उसने कमाई की	बेशक	अल्लाह	जल्द लेने वाला है	हिसाब	ये

بَلٰغٌ	لِّلنَّاسِ	وَلِيُنْذَرُوْا	بِهٖ	وَلِيَعْلَمُوْٓا	اَنَّمَا	هُوَ
पैग़ाम है	लोगों के लिए	और ताकि वो डराए जाऐं	साथ इसके	और ताकि वो जान लें	बेशक	वो

ع 7 11 19

اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ	وَّلِيَذَّكَّرَ	اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿52﴾ ع
इलाह है	एक ही	और ताकि नसीहत पकड़ें	अक़्ल वाले

اٰيَاتُهَا: 99 | 15 سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ 54 | رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ قف	تِلْكَ	اٰيٰتُ	الْكِتٰبِ	وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ①
الٓرٰ	ये	आयात हैं	किताब की	और क़ुरआन वाज़ेह की